बजन्ता-बुझन्ता

बजन्ता-बुझन्ता

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-८९-१

दाम : २०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१३

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी

मिथिला, बिहार

पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal.

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),

मो.- 09572450405, 09931654742

Bajanta-Bujhanta : A Collection of Maithili Seed Stories by Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

अनुक्रम

२. फकचोट 0
३. काँच सूत 0
४. बुधनी दादी 0
५. खिलतोड़ 0
६. मुँह-कान 0
७. अनदिना 0
८. अपन काज 0
९. दूरी
१०. पुरनी भौजी
११. छूटि गेल
१२. काल्हि दिन
१३. अप्पन हारि
१४. कनफुसकी
१५. मुँहक बात मुहेँमे
१६. कनीटा बात
१७. गति-गुद्दा
१८. बिसवास
१९. कचहरिया-भाय
२०. गुहारि
२१. शिवजीक डाक-बाक्
२२. सोग
२३. पनचैती
२४. कनमन
२५. अजाति
२६. पटोर
२७. फुसियाह
२८. गति-मुक्ति

२९. चौकीदारी
३०. झगड़ाउ-झोटैला
३१. घबाह ट्यूशन
३२. दादी-माँ
३३. पटोटन
३४. मुसाइ पंडित
३५. भरमे-सरम
३६. देखल दिन
३७. फज्झति
३८. अकास दीप
३९. बुधि-बधिया
४०. पहाड़क बेथा
४१. उमकी
४२. बजन्ता-बुझन्ता
४३. चर्मरोग
४४. शंका
४५. ओसार
४६. छोटका काका
४७. सीमा-सड़हद
४८. रमैत जोगी बोहैत पानि
४९. गंजन
५०. सजए
५१. घटक बाबा
५२. आने जकाँ
५३. दान-दछिना
५४. उड़हड़ि
५५. मत्हानि
५६. मेकचो

५७. झूटका विदाइ
५८. मुँहक खतियान
५९. कोसलिया
६०. हूसि गेल
६१. पोखला कटहर
६२. सरही सौबजा
६३. तेरहो करम
६४. डुमैत जिनगी
६५. चोर-सिपाही
६६. दूधबला
६७. टाइपिस्ट
६८. समदाही
६९. बुढ़िया दादी

कचोट

आजादीक चौसठिम वर्षगाँठ मनबए खुशीक समुद्रमे बाल-वृद्ध डुमल। चौदह अगस्तक निसभेर राति। अचानक पत्नीक छातीमे टनक उठलनि। दू बजैत। बारहे बजे रातिसँ जहाँ-तहाँ रबासि-फटाका फुटैत। अधिक धिया-पुता भेने बेसीकाल घरवाली खन-खनाएले रहै छथि। अपनो अभ्यस्त भऽ गेल छी। जइसँ ने डाक्टर ओइठाम जाइमे अबूह लगैए आ ने लसुतेला बना मालिश करैमे। घरक अनिवार्य खर्चमे दबाइओ-दारू आबि गेल अछि। तँए कखनो मनमे चिन्ता-फिकिर नहियेँ जकाँ रहैए।

एक तँ सौन-भादबक अन्हार, तैपर मेघडम्बर जकाँ मेघौन। एत्ती रातिमे की करब? ने गाममे डाक्टर छथि जे लालटेनो हाथे बजा अनबनि, थाल-किचारक रस्ता, चारि किलोमीटरपर डाक्टरक घर। जहिना कोनो फनिगा मकड़जालमे फँसि छटपटाइत तहिना मन छटपटाए लगल। मन पड़ल दुनू परानीक जिनगी। समाजमे अपना सन केते जोड़ा अछि जे दोहरा कऽ सिनूर भरने हएत। जीता-जिनगी विश्वासघाती नै बनब। जे बनि पड़त तइमे पाछू नै हटब। उत्साह जगल।

घरक जेते टँगर रही सेवामे जुटि गेलौं। कियो तेलक मालिश तँ कियो सुखले ऐंठुआ ससार करए लगलनि। अपने रिक्शा भँजियाबए विदा भेलौं। मझिली बेटी माएक आँगुर फोड़ि-फोड़ि रोग जाँचए लगलि। जहिना थर्मामीटर लगा डाक्टर बोखारक जाँच करैत तहिना ने मलकारो मालक पाउज गनि रोगक जाँच करैए।

तीन बजे भोरमे रिक्शा नेने पहुँचलौं। माएकेँ उठा बेटा-बेटी रिक्शापर चढ़ौलक। जेठका बेटाकेँ संग केने डाक्टर ओइठाम विदा होइत तेसर बेटाकेँ कहलिऐ-

''बौआ दिनेश, माल-जालक तकतान करब।''

गामेक मिड्ल स्कूलक पाँचमा क्लासमे पढ़ैत दिनेश। फस्ट करैए। शिक्षककेँ जहिना गुरुक आदर करैए तहिना अपनो दुनू बेकती लेल श्रवणे-कुमार छी।

साढ़े एगारह बजे घूमि कऽ एलौं। एक तँ रौद तैपर कठगुमारी। पिआसे मन तबधल रहए। दरबज्जापर रिक्शा देखिते दिनेश लोटामे पानि नेने पहुँचल। लोटाक पानि देखि हृदए उमड़ि गेल। अनासुरती मुहसँ निकलल-

''बौआ, इसकूल...।''

अखनि धरि दिनेश बिसरि गेल छल पनरह अगस्त, स्वतंत्रता दिवस। बिसरि गेल छल झंडाक संग मिल चलब, बिसरि गेल छल नव वर्षक उपहार।

दिनेश बाजल-

नै, केना जेतौं।''

मनमे असहनीय कचोट भेल। मुदा बात बहलबैत बजलौं-

''बौआ, एहेन फेड़ा जिनगीमे कहियो ने भेल छल। मुदा सभ शुभ-शुभ सम्पन्न भेल।''

❍

काँच सूत

साठि बर्खक संगी पैंसैठम बर्खमे रहने तँ मोहनकेँ किछु नै बूझि पड़लनि मुदा सोहनकेँ मन कहलकनि जे भरिसक दुनू गोटेक बीचक सम्बन्ध काँच सूतमे बन्हल छल।

मोहनो आ सोहनोक-घर बीघा दुइयेक हटल। ओना दुनू दू जातिक मुदा दू जातिक बीच जेते दूरी बनल अछि तेते नै छन्हि। कारण जे एकठाम रहने बहुत बिमारी लगिओ जाइ छै आ छूटिओ जाइ छै। तहिना दुनू गोटेक बीच रहने छन्हि। दुनू लंगोटिया संगी। ओना किछुए मासक कमी-बेसी दुनूक बीच छन्हि, मुदा पाँच बर्ख धरि तँ बच्चाकेँ घरे-अँगना चिन्हेमे लगि जाइ छै।

गामक कतिका माने जाड़क मासक अखड़ाहासँ लऽ कऽ कवड्डी, गुड़ी-गुड़ीक मैदान होइत विद्यालय धरिक संगी दुनू गोटे। ओना गामक विद्यालयक पछाति दुनू गोटे दू विद्यालयमे पढ़लनि, मुदा ग्रेजुएशन एके साल दुनू केलनि। साइंसक विद्यार्थी रहने मोहन कौलेजमे डिमॉसटेटर बनला। आ सोहन एम.ए.मे नाओं लिखौलनि। पछाति एम.ए.सी. केलोपरान्त मोहन लेक्चरर बनि तीन साल पहिने सेवा-निवृति भेला।

एक तँ जिनगी भरिक संगी, दोसर समाजक पढ़ल-लिखल तँए बैसार-उसार एकठाम अधिक काल होइत। रौदियाह समए भेने पहिल शिकार खेतसँ जुड़ल लोक हेता, तँए अखनि चौक-चौराहाक मुख्य विषय रौदी बनल अछि।

छह बजे साँझ। टहलि-बूलि कऽ दुनू गोटे आबि चौकपर बैसला। लाटमे पान-सात गोटे सेहो बैसला। धानक जरैत खेती देखि सोहन दालिक खेतीक चर्च उठबैत कहलखिन-

‘‘अस्सीक दशकसँ पहिने दालि सस्त छल आ अखनि वएह महग भऽ गेल अछि। पानि नै भेने अखनि उपएओ तँ दोसर नहियेँ अछि। सरकारी जे अछि से कागतेमे अछि।’’

जेना सोहनक बात मोहनकँ लागि गेलनि। प्रतिवाद करैत बजला- ‘‘हमरा उमेरसँ बेसी तोरो उमेर नहियेँ हेतह, जहियासँ देखै छिऐ दालिए महग अछि।’’

विचारमे लोच दैत सोहन बजला-

‘‘अपना ऐठाम कहबी छै जे ‘नीच काज कऽ ली मुदा राहरिक बोइन नै ली।’ कोनो कहबी ओहिना नै होइ छै।’’

जेना केते घैल घी मोहनक सोहन हरा देने होन्हि तहिना आगि-बबूला भऽ उठि विदा होइत बजला-

‘‘केकरो कहने किछु भऽ जाइ छै।’’

सोहन गुमे रहला। किछु कालक पछाति सोहनक मनमे उठलनि की फूसि बाजल छेलौं? तखनि लगलनि किए? नजरि पाछू दिस बढ़लनि। जहिना पहिया कऽ गाड़ीक पहिया चलैए तहिना पहिया कऽ देखलापर देखलनि जे जे जिनगी छलॉगसँ उठै छै ओ ओहिना निच्चो होइ छै, मुदा धड़िआ कऽ जे जिनगी उठै छै ओ धड़ियाइते रहै छै, चाहे जेम्हर जाउ। आइ बुझै छी जे दुनू गोटे काँच सूतमे बन्हल छेलौं जे अबैत-अबैत आइ टूटि गेल। संगी रहने लोक हराइए, भँसिआइए। मुदा, असगर चलनिहार केतए हराएत। पत्ता पकड़ि बिच्ची पकड़ैक लूरि चाही।

❍

बुधनी दादी

जहिना कुम्हारकेँ भादवक रौद वादलमे झँपा गेने दुर्दिन आगूमे नाचए लगैत तहिना बुधनी दादीकेँ साल भरिसँ भऽ रहल छन्हि। साल भरि पहिने तक जाबे पति जीबै छेलनि ताबे दिल्लीक कमाइसँ जे सुख केलनि, रहितो आब नै भऽ पाबि रहल छन्हि। सोलह कोठरीक हथिसार जकाँ मकानमे असकरे रहैत डर होइ छन्हि जे कहीं सूतली रातिमे भुमकम भेल आ घर खसल तँ महिनो दिनमे ऊपर हएब कि नै। तरेमे सड़ि कऽ महकि जाएब।

जहिया बुधनी दादी नैहरसँ सासुर एली तहिएसँ कहू आकि नैहरोमे तइसँ पहिनेसँ कहू, नहेला पछाति हनुमान चलीसा पढ़िते छथि। किताब देखि कऽ नै मुँह जुआनियैँ। गामक तीन टोलमे आबा-जाही बुधनी दादीकेँ छन्हि। कोन-पावनि कहिया हएत आ कोन उपास कहिया पड़त से हिसाव जोड़ए अबै छन्हि। तैसंग ईहो छन्हि जे सामाक गीत टोलक कोन बात जे गामेमे सभसँ बेसी अबै छन्हि।

छठिक भिनसुरका अर्घ पड़ि गेल आइसँ सामाक गीत हएत। दसमी श्रेणीक राधा बुधनी दादी लग पहुँचल। पहुँचिते राधा बुधनी दादीकेँ गोड़ लागि कहलकनि-

‘‘दादी, अपन मोबाइल नम्बर दऽ दिअ। जखनि अबैक छुट्टी हएत एबो करब नै तँ मोबाइलेपर लिखि लेब।’’

मोबाइलिक नाओं सुनिते बुधनी दादीक मन गाछसँ खसल कटहर जकाँ आँठी उड़ि केतौ, कमरी उड़ि केतौ, नेरहा उड़ि केतौ, छँहोछित भऽ गेलनि। बजली-

‘‘बुच्ची, आब तोरा सबहक जुग-जमाना एलह। बेटा मोबाइल पठा देलक जइसँ कहियो काल धियो-पुतो आ बेटो-पुतोहुसँ गप-सप्प होइ छेलए। सेहो केदैन चोरा लेलक। भरि दिन अँगनेमे बैसल रहब से पार

लगत। मूस तेते भऽ गेल अछि जे ने नुआ-विस्तरक सेखी रहए दइए आ ने खाइ-पीऐक।''

राधा कहलकनि-

''दादी, अहिना जिनगी चलै छै।''

बुधनी दादी-

''बुच्ची, जीबैक मन होइए मुदा तेहेन-तेहेन आपैत-विपैत सभ अछि जे होइए तइसँ नीक भरमे-सरमे मरि जाइ।''

❍

खिलतोड़

आकाशवाणी केन्द्रक कार्यक्रमक कृषि विभागसँ दयाकान्त तीस बर्ख पछाति सेवा-निवृति भेला। खेती-पथारीक कार्यक्रमक चिन्हार चेहरा बनौने रहला। नोकरी पाबि जिनगीमे बहुत किछु केलनि। तीनू बेटो आ दुनू बेटीओकेँ पढ़ा-लिखा, नोकरी धरा नेने छथि। अपनो रहैक बेवस्था शहरेमे कऽ लेलनि। सेवा-निवृत्तिक चारि बर्ख पछाति मन उबियेलनि जे शहरमे नै रहब, बाप-दादाक बनौल गाममे रहब। मन उबियाइक कारण भेलनि जे पुरना संगी सभमे किछु गोटे आन शहर, तँ किछु गोटे गाम आ किछु गोटे मरियो गेला। पछाति जे संगी भेटलनि, हुनका सभसँ तेहेन सम्बन्ध नै बनि सकलनि जेहेन पहुलका सबहक संग छेलनि। दूर रहने परिवारोक (बेटा-बेटीक) सम्बन्ध पतराए गेल रहनि। पत्नीओ संगी नै बनि सभ दिन भनसिए रहि गेलनि।

खंडहर जकाँ घर-घराड़ी। गाम अबिते पहिने घर-अँगना, बीस बर्खसँ परता पड़ल चापाकल उड़ाहलनि। दरबज्जापर अबैत-अबैत मास दिन लगि गेलनि। दरबज्जापर अबिते देखलनि जे अगिला वाड़ी परती पड़ल अछि। जँ एकरा चौमास बना लेब तँ सालो भरि परिवारक तीमन-तरकारी तँ चलबे करत जे किछु बाँटियो-खोंटि लेब।

सहए केलनि। कहिया केतएसँ परता पड़ल खेतकेँ गहींरसँ ताम करबा दयाकान्त चौमास बनौलनि। अल्लूक खेती केलनि। अखनि धरि जे अल्लूक खेतीक सम्बन्धमे बुझै छला तही हिसाबसँ खेत तैयारो केलनि आ खाद-कीटनाश दऽ रोपबो केलनि।

बीस दिन रोपला पछाति खेतमे चारि आना गाछ देखलनि। मुदा घबड़ेला नै, सबूर केलनि जे अखनि जनमैओक समए छैहे। तीस दिन पछाति जखनि ओहो चौअन्नी गाछमे सँ अदहा-सँ-बेसी जरिए गेलनि तखनि माथ ठमकलनि। मुदा पुछबो किनकासँ कएल जाए। तहूमे जिनगी भरि अपने दोसरकेँ बुझेलौं। ओना ओझरी मनमे लगए लगलनि मुदा चेत

गेला। जे खेतीक मर्म बुझैत होथि तिनकासँ बूझब नीके छी। बूझब, गहराइसँ बूझब आ मर्म बूझब भिन्न होइत अछि।

ठेहियाएल दयाकान्त दीनानाथ ओइठाम पहुँचला। दयाकान्तकेँ देखिते दीनानाथ कहलकनि-

"आऊ-आऊ, लाल भाय।"

रेडियो स्टेशनमे लाल भाइक नाओंसँ दयाकान्त छला तँए लाले भाइक नाओंसँ जनै छन्हि।

चाह पीब दयाकान्त बजला-

"दीना भाय, अल्लू रोपलौं से गाछे ने भेल?"

जहिना सौरखीक पात देखि डाँट पकड़ि सौरखी उखाड़ल जाइत तहिना दीनानाथ पकड़ि पुछलखिन-

"अल्लू खुनि कऽ देखलिऐ जे सड़ि गेल आकि जीविते अछि?"

"हँ, सभ सड़ि गेल।"

"खेतमे हाल केहेन अछि?"

"से तँ बढ़ियाँ अछि। ओते नै अछि जे अल्लू सड़ि जाएत।"

"तखनि?"

"सएह नै बुझै छी।"

"बीआ काटि कऽ रोपने छेलौं की सौंसे?"

"गोटगरहा सौंस रोपने छेलौं। तैसंग खादो आ कीटनाशको भरपूर देने छेलिऐ।"

खादक मात्रा सुनि दीनानाथ कहलकनि-

"देखियौ, कहिया केतएसँ जमीन पड़ता छल खिलतोड़ भेल। ओकरा अपनेमे ओते शक्ति छै जे सुभर उपजा दऽ सकैए। तइमे तेते खाद दऽ देलिऐ जे बीए जरि गेल।"

❍

मुँह-कान

काल्हिए बैंकक मैनेजर आबि सुनरलालक गाएकेँ सेहो देखि गेल छला। एक्कैस हजारक गाए। गामक किसानक बीच एकछाहा चर्च। कियो सिलेब रंगक चर्च करैत तँ कियो सिंह-सिंगहौटीक। कियो थुथुनक चर्च करैत तँ कियो गरदनिक अगिलाक।

जैठाम मनुखोकेँ उचित अन्न नै भेट रहल अछि तैठाम मवेशी पालन धिया-पुताक खेल छिऐ। केते दूधक जरूरति अछि, तइले केते मवेशीक जरूरति पड़त मूल प्रश्न भेल।

एक तँ एक्कैस हजारक गाए गाममे आएल अछि। अखनि धरि जे नै आएल छल। बैंकक लाभ जरूर भेल। मनधनो काका गाए देखए सुनरलालक ऐठाम एला।

गाएक रंग-रूप देखि मनधन काका चैन होइत तमाकू खाइले बैसला। खुशीसँ खुशियाएल सुनरलाल बाजल-

“काका, बहूदिनसँ हीक गड़ल छल जे एकटा नीक गाए खुँटापर बान्हब, से भगवान पूर केलनि।”

भवधारमे बोहैत सुनरलालकेँ देखि मनधन काका कहलखिन-

“बड़ सुनर गाए छह। मलकार की सभ कहलकह?”

काजक जड़ि दिस बढ़ैत सुनरलाल बाजल-

“चारि मास पछाति एक संझू भऽ जाएत आ छह मास लागत।”

“केते दूध होइ छह?”

“दू किलो भिनसर आ डेढ़ किलो साँझमे।”

दूधक नाओं सुनि मनधन काका चौंक गेला जे बाप रे केतएसँ बैंकक कर्ज चुकौत, केतएसँ गाएक खरच जुटौत आ केतएसँ अपने गुजर करत। बात आगू नै बढ़ा मनधन काका सुनरलालकेँ चरियबैत कहलखिन-

“छब दे तमाकुल खुआबह। एकटा काज मन पड़ि गेल।”

“एना अगुताइ किए छी?”

मुदा मनधन काकाकेँ कोनो जवाब नै फुड़लनि। मनमे नचैत रहनि युग तँ आर्थिक मोड़ लऽ रहल अछि। मुदा घिड़नीक चालि किम्हर छै वस्तुक गुण दिस आकि सुआद दिस?

❍

अनदिना

शिक्षक अमरनाथकेँ देखिते रामकिसुन पुछलकनि-

“मास्सैब, अनदिना गाममे देखै छी?”

रामकिसुनक प्रश्नसँ अमरनाथ अचंभित भऽ गेला जे एहेन बात किए पुछलनि। मुदा बाजबो तँ उचित नहियेँ हएत। रंग-बिरंगक जहिना शिक्षक छथि तहिना विद्यार्थीओ अछि। जेहने चलबैबला अछि तेहने चलौनिहारो अछि। की हमरा कहने झूठ भऽ जेतै जे शिक्षक सभ दरमहे टा उठबए विद्यालय जाइ छथि, तँए कि ईहो झूठ भऽ जाएत जे सरकारो दहिन गबैया जकाँ महिने-महिने दरमाहा देब छोड़ि सालक-सालेक पाहि लगबै छै। अमरनाथक मन ठमकलनि। अनदिना गाममे देखै छी, अहाँ गामसँ हटि नोकरी करै छी, बिनु छुट्टीक दिन गाममे छी, की समाजक एतबे दायित्व बनै छै जे फल्लाँ भाइक सातो बेटा गुरुजी बनि गेलखिन। अधभर मुस्की दैत अमरनाथ कहलखिन-

“भाय, की कहै छी, जुगेमे भूर भऽ गेलै। अमैया छुट्टीमे गाम एलौं हेन आ ऐठाम देखै छी जे फैजली सभ कोशेबो ने कएल हेन।”

दिन ठेकनबैत रामकिसुन पुछलकनि-

“केते दिनक छुट्टी अछि जे एना हदिया गेलौं?”

“आब कि ओ जुग-जमाना रहल जे रोहनियासँ फैजली तक खाइक छुट्टी होइ छै। अदहासँ बेसी छुट्टी कटियो गेल अछि। जब हमर स्कूल खुजल तेकर पछाति आन-आन स्कूलमे छुट्टी हेतै।”

रामकिसुन कहलकनि-

“ई तँ अजगुते भेल?”

दहिना हाथसँ चानि ठोकि अमरनाथ कहलखिन-

“अहाँ अजगुत कहै छिऐ। एतबे अछि। पहिने सरकारीओ ऑफिसमे आ आनो-आनो ठाम किरानी होइ छेलै अखनो अछि। तहिना स्कूलमे शिक्षक होइ छला अखनो छथि। मुदा आबक शिक्षक सालो भरिक नै छह

मसुआ बनि गेला। छह मास धिया-पुताकेँ पढ़ाउ आ छह मास ऑफिसक काज करू। जहिना नाचमे लेबरा सभ नै लेबराइ करैए तहिना ने हमहूँ सभ कखनो माल्थस रॉविनसन करै छी तँ कखनो आबि घरे-घर बकरी-छागरक गिनती करै छी।''

अमरनाथक बात सुनि रामकिसुन ओल जकाँ कबकवेला नै, मुस्की दैत कहलखिन-

''होउ, अहीं सबहक जुग-जमाना छी, जे काटब से काटि लिअ।''

रामकिसुनक काटब सुनि अमरनाथ अह्लादित होइत कहलखिन-

''ठीके ने अहाँ कहै छी। अपना सभकेँ जे सभसँ छोटका दिन होइए, ओइमे कथीक छुट्टी होइए से बूझल अछि?''

''नै।''

''बड़ा दिनक!''

❍

अपन काज

तेजीसँ समए अगुएने, विकास भेने महगीओक वृद्धि धकधका गेल। तहूमे तीमन-तरकारीक तेजी भेने, वाड़ी-झाड़ीसँ टपि खेत-पथार दिस बढ़ल। जइ चौमासमे अंडी-बगहंडीसँ लऽ कऽ भाँग-धथुरक बिरदावन रहैत आएल छल ओ कटि-खोंटि चौमासो दिस घुसकुनियाँ कटलक।

अखनि धरि कपलेसर, परिवार धरिक तरकारी उपजबै छल सेहो कोनचरमे सजमनिक गाछ आ गौसारपर अल्लू-कोवी, मिरचाइ, भट्टा उपजबै छल ओ चारि कट्ठा कोवी खेती करत। ओना पाँच बीघा जोतक किसान कपलेसर, मुदा खेतमे खादक हिसाब धाने-गहुमक बुझैए।

मिरचाइ वाड़ीकेँ कड़चीसँ भोला बतियबैत रहथि आकि कपलेसर अबिते पुछलकनि-

“भैया, चारि कट्ठा कोवी खेती करब, तइमे केते खाद लगतै?”

कपलेसरक प्रश्न सुनि भोला तारतममे पड़ि गेला। रंग-बिरंगक प्रश्न मनमे उठलनि। जइ खेतमे पहिल बेर खेती हएत आ जइ खेतमे साले-साल होइ छै, उपजैक दृष्टिसँ दुनू एक केना भेल। कोवीक पछिला फसिल कि छेलै, सिरो तँ रंग-रंगक होइ छै। कोनो छह आँगुर ऊपरे धरिक तँ कोनो बीत भरिक, कोनो तोहूसँ गहींरक। जँ खेत खसले अछि तँ केते दिनसँ खसल अछि तही हिसाबसँ ने रसेबो करत। तहूमे पृथ्वीक रस तँ आरो एकभग्गु छै। भोलाक मनमे लगले उठलनि जे जखनि वेचारा पूछए आएल सेहो ओहिना नै देखबो करैए। तखनि किछु नै कहिऐ से केहेन हएत। किछु कहैले ठोर चटपटेलनि मुदा मनमे उठि गेलनि जे कोन खादक नाओं कहबै। ओहोमे तँ करामतिए अछि। एक्के खादमे कथूक मात्रा बेसी रहै छै तँ कथूक कम। मन अकछए लगलनि जे अनेरे अपनो काज बरदा मगजमारी कऽ रहल छी। मुदा धाँइ दऽ किछु कहियो देनाइ केहेन हएत। मन घुमलनि अपन जवाब अपने उठलनि जे काज बरदाइए आकि दोसर काज ठाढ़ करैए। असथिर मन होइते

पोखरिक पानिमे जहिना हवा पाबि हिलकोर उठैए तहिना हिलकोर उठलनि। प्रकृतिक हिसावसँ मौसम बनै-बदलैए। फसिलक अपन गति छै। तैठाम क्षेत्र-क्षेत्रक मिलान नै हएत तँ उपजाक केते भरोस कएल जाएत। दुनियाँ घर अँगना बनि गेल अछि दूरक बात बेसी बूझै छी आ घरक बात बुझिते ने छी। गहुमेक बागुक समए इलाका-इलाकामे अलग-अलग तिथिसँ होइत अछि, तेकरा केना बूझब। अपन बात सहजे शीतगृहमे रखि देने छी, नै तँ जयंती बाबड़ीमे थोड़े बन्हाएत। मन थीर होइते भोला कहलकनि-

''कपले, पढ़ल-लिखल जेहेन छी से तहूँ जनिते छह, आब तोरो उमेर कम नहियेँ भेलह। खेती करै छी पुछलह तँ कहै छियऽ। चारि किलो डी.ए.पी. तीन किलो पोटाश, कीटनाशक संग खेतमे मिला दिहक। नवका किस्मक बीआ छेबे करह सवा-हाथ, डेढ़-हाथपर रोपिहऽ।''

❍

दूरी

जहिना समैपर काज भेने, भोजन आ अराम भेने, मनमे हलचल कम उठैत तहिना नै भेने बेसी उठैए। लोहोक मशीन निअमित चलने अपन जिनगीक गारंटी करैए तहिना मनुखोकेँ गारंटीक सीमा भरिसक हेबे करतै।

निअमित जिनगीमे चलैत चिन्तू चाहक प्रतीक्षामे बैसल रहथि। ओना चाहक संयोग नीक छेलनि जे पुतोहुक बदला पत्नी हाथक चाह कएक दिनुका पछाति भेटतनि मुदा मन ओझड़ाइत रहनि जे पत्नी बिनु पुछने तीन दिनपर चारि बजे भोरे आबि गेलखिन। मनक ओझरीक दूटा कारण छेलनि। पहिल बिनु पुछने भाए-भौजाइ ऐठाम गेल रहथिन, जहिना गेल रहथिन तहिना बिनु बजौने चलिए आएल रहथिन। दोसर कारण रहनि जे जखनि ने हम हुनका (पत्नी) भरोसे जीबै छी आ ने ओ हमरा भरोसे, तखनि जँ नहियेँ पुछलनि तँ कि हेतै।

समैसँ बहुत पहिने तँ नहियेँ, अपने दोसरे दिस रहथि, मुदा सएक अन्त नै शुरूहे दिसक रहनि तँए चिन्तूक मन बेसी आगू नै बढ़ि ठमकि गेलनि। मुदा ठमकल नै रहलनि जेना पछिलुके गप मोनकेँ तेना हौड़ि-हाँड़ि देलकनि जे चाहक एके चुस्की लैत दोसर ठाढ़ भऽ गेलनि। ओ ई भेलनि जे पुरुष-औरत मिलि एक जिनगी ठाढ़ करैए, मुदा दुनू (माए-बाप)क बीच दूरी तँ अछिए। तखनि किए कहै छै जे एक बाप-माएक दुनू परानीक बीच जे दूरी अछि ओकरो झुठलौल जा सकैए। दू इलाका (लग-दूर) दू बोली, दू संस्कृति जिनगीक क्रिया।

तैबीच अपसियाँत होइत पोता इन्तू आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलनि। इन्तूक ड्यूटी छेलै भिनसुरका चाह बाबाकेँ पहुँचेनाइ। चाह पहुँचा पत्नी अँटकली नै तैबीच इन्तू आबि गेल। बाबाकेँ अनुकूल बनबैत इन्तू पुछलकनि-

“बाबा हौ, मन बड़ खुशी देखै छियऽ?”

लत्तीए जकाँ बातो लतड़ै छै। साङह लगबैत बाबा पुछलखिन-

''से तूँ केना बुझै छीही?''

इन्तू टपकि खसल-

''दादीओकेँ हँसैत जाइत देखने छेलियऽ।''

❍

पुरनी भौजी

बीस दिन बरिसाइत भेनौं धुर-झाड़ आम पाकब शुरू नै भेल अछि।

बिनु बर्खाक गरै जकाँ मेघक रूखि पकड़लक। दसो पोता-पोतीकेँ नेने पुरनी भौजी रोहनिया आमक झमटगरहा गाछ लग बैस दसोकेँ कहलखिन-

''जे पहिने पाओत से मीरा, जे दोसर पाओत से दोहल, जे तेसर पाओत से तेहल आ जे चारिम पाओत से चौहल।''

पुरनी भौजीकेँ तीनटा बेटा छन्हि। बिनु गहबर गेनौं पोती-पोतीक ढबाहि लगल छन्हि। बच्चा देखि माएक ममता तँ स्वाभाविक अछि। बाप तँ भरि दिन बोनाएले रहै छथि।

दस बर्खक पोता जे मिड़ल स्कूलमे पढ़ैए; टेंटियाह सुग्गा जकाँ टाहि मारलक-

''मीरा माने की भेल?''

बिहाड़ि तँ बिड़हा गेल मुदा हवाक सिहकी उठल। ढेनुआर जकाँ धऽ कऽ भड़भड़ा गेल। के पहिने पौलक तेकर ठेकाने ने रहल।

❍

छूटि गेल

तृतीयाक साँझ भगवती स्थानमे दऽ सावित्री बाबा लग आबि फुदकैत बाजल-

''बाबा, एकटा बात बुझलौं हेन?''

मद भरल पोतीक बात सुनि आगू सुनैक आशामे आस काशीनाथ ओइ संगीत प्रेमी जकाँ मारलनि जे एकक पछाति दोसरो सुनए चाहैत। मुँह बाबि पोती दिस देखए लगला। मुँह रोकि सावित्री महराइक पलगाँ जकाँ प्रतिक्षा करए लगली। काशीनाथक मन फड़फड़ेलनि जे भरिसक चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप खेल ने भऽ गेल। हमरा उठलेसँ काज तँ हमरा बैसलेसँ काज।

सावित्रीकेँ काशीनाथ पुछलखिन-

''की सुनलौं?''

''अबै छेलौं तँ अहाँ दे लोक सभ बजै छला जे ओ आब केकरो नै गरियबै छथिन!''

गारिक नाओं सुनि सावित्रीकेँ अनुकूल बनबैत काशीनाथ कहलखिन-

''बुच्ची, केतेकेँ गरियाएब। अपने मुँह दुखा जाइए। छोड़ि देलिऐ तँए छूटि गेल।''

❍

काल्हि दिन

हमरा गामक पजरे पाभरि हटल कटहरबा गाम छै। हमरा गाम जकाँ बरहवर्णा तँ नै मुदा तैयो दू सए घरसँ उपरेक छै। तीनिए-चारि जातिक बस्ती।

समांगक पातर रहने परदेश नै जाइ छी। अधपुरान साइकिलपर मसल्लाक (मिरचाइ, हरदी, धनिया, लहसुन इत्यादि) कारोबार करै छी। हमर मेन मारकेट कटहरबे छी। पनरह-बीस घरक पाहि लगौने छी, सभ दिन हरिअरीए रहैए। बनियाँ जाति बाँकी दुनियाँसँ कोनो मतलब नै।

पछिला सालक भौँट दिन की भेलै से अखनो ने बुझै छी। एतबे देखै छी जे दुनू गामक बीच खूब मारि भेल। दुनू गामक लोक झोरा लऽ लऽ कोट-कचहरी करैए। चाहे जेकर गोटी लाल होइ आकि कारी, तइसँ हमरा कोन मतलब।

छगुन्तामे पड़ल छी जे मारि केलक कोइ रोजी-रोटी हमर केना छीना गेल। एकठाम रहितो दुनू गामक आबा-जाही किए बन्न भऽ गेल? अपना खेत-पथार अछि जे अपने आगिए-पानिए निमहब! तैबीच पत्नी आबि पुछलनि-

“एना सोग-पीड़ामे परिवार चलत?”

हम कहलियनि-

“काल्हि दिन केना चलत सएह तँ अपनो विचारै छी!”

❍

अप्पन हारि

मनकेँ केतबो अपना दिससँ बहटारए चाहै छी तैयो कुकुर जकाँ दुआर-दरबज्जा छोड़बे ने करैए। छोड़बो केना करत? कोनो कि आइयेक संगी छी आकि जहिए पशु-पक्षी दिस तकलौं तहिएसँ ने ओहो संग लगि परिवारमे सटि गेल।

अपन दुरागमन भेल। आने सभ जकाँ अपनो बूझि पड़ए लगल जे सौंसे दुनियाँ दुल्हनिएसँ भरल अछि। तहिना पत्नीओक आँखि हमरा छोड़ि किछु देखबे ने करनि। थोपड़ी कि कोनो एक्के हाथे बजैए। ओइले तँ दुनू हाथ चाही। से भेबो कएल। बूझि पड़ए जे सौंसे दुनियाँ फूसि आ दुइए परानी सत् छी। एहेन स्थितिमे मेल-मिलानक कथे की। कान्हीसँ विचार धरिक।

जहिना दुनू कसमकस पार्टीक बीच फैसला उचित होइत तहिना भगवान निसाफो केलनि। तइसँ फलो नीक भेटल। जौआँ बेटा भेल। जँ दुनू दू रहैत तँ बेइमानीओ होइतै, से एक्के रहए। खुशी तँ दुनू परानीकेँ भेल मुदा दू दिशामे। अपना मनमे हुअए जे हे भगवान दसो साल जँ एहेन उपजा देलह तँ गाममे बीस भऽ जाएब। तरे-तर माघक खेसारी जकाँ मन गदगदाएल। मुदा पाटनरक विचार दोसरे रहनि। एकहरी बच्चाक होन्हहारी-दर्द दोहराएल रहनि तँए पाण्डु रोग जकाँ पीड़ी पकड़ने।

चारि-पाँच मासक पछाति फेर दुनियाँ दिस दुनू पाटनर तकलौं। मुदा विचारमे खट-पट हुअ लगल। खट-पट एते बढ़ि गेल जे एक-एक बेटा बाँटि दुनू दू दिस भऽ गेलौं।

तीन बर्ख भऽ रहल अछि। पत्नीक हिस्साक बच्चा फूल सन लहलह करैए। वएह अपन दहिना हाथक चटकन दिन-राति खाइए। कोन दुर्मतिया कपारपर चढ़ि गेल जे औझका थापर एहेन लागि गेलै जे मुहेँ भरे माटिपर खसल।

अपन कोखिक कनैत बच्चाकेँ देखि पत्नी गड़ियबैत बजली-

''पुरुख नै पुरुखक झड़ छी।''

सुनि क्रोध नै उठल। जेना मनक सभ ताप-संताप मेटा गेल हुअए। लजाएल आँखि, आँखिपर देलियनि तँ बूझि पड़ल जे झपटि लेती। मुदा जहिना रौद पानिमे आ पानि रौदमे सटि नव जीवन धड़ैत तहिना आब अपनो विचारै छी।

❍

कनफुसकी

गामेक स्कूलमे सोहनक संग दोस्ती भेल। ओना एक्के गाममे कनीए हटि कऽ दुनू गोरेक घरो अछि मुदा आने गाम जकाँ। तीस साल पूर्व जखनि एक्के विद्यालयमे नोकरी भेटल तखनि नजदीकी आएल। पाँच बर्ख पछाति अबर-जात नौत-पिहानमे बदलि गेल। दू जाति रहितो छान-बान कमल।

तीस बर्ख पछाति आइ एहेन भऽ गेल जे नजरि दिससँ नजरि मिलए नै चाहैए। सभ गुण मिलतो एकटा अवगुन सोहनमे शुरूहेसँ रहल जे अनका कानमे फुसफुसा विचार कऽ घुसका-फुसका दैत। जे ऐबेर बुझलौं। सेहो केना बुझलौं तँ जेकरा लग बजला ओ आबि जड़ि-सँ-अंत धरि कहलनि। मन तुरुछि गेल। संग केने जखनि सोहन लग पहुँच पुछलियनि-

''भाय, की सभ भोला भायकेँ कहलियनि हेन?''

प्रश्न सुनि जेना सोहनक बीख ओइ साँप सदृश बूझि पड़ल जे हबक मारैले केकरो खेहारए लगैत, तैबीच दोसरकेँ पाबि काटि लैत, तहिना! ने ओ किछु बजला आ ने दोहरा कऽ किछु पुछलियनि।

❍

मुँहक बात मुहेँमे

पछबारि गामबलाकेँ एहेन दशा कहियो ने भेल हेतनि जेहेन आइ बहिरा माए केलकनि?

पछबारि गामक घटक बहिरापर अबै छला। गाम, घर-बरक चर्च सुनि नेने छेलखिन। मन मानि गेल रहनि जे अपना जोकर कुटुमैती नीक अछि।

गामक सीमानपर अबिते एक गोटेकेँ पूछि देलखिन। सभ गुणक चर्च नीके बूझि पड़लनि मुदा बहिरा नाओं सुनि मन भनभना गेलनि। मन भनभनाइते, बैलून जकाँ देहक शक्ति निकलए लगलनि। आमक गाछ देखि, निच्चाँमे बैस सोचए लगला जे आब की करब?

घटकक भाँज बुझिते बहिरा माए विदा भेली। घटक लग पहुँच बजली-

''कोन गॉ रहै छी, केतए जाएब?''

घटक कहलखिन-

''एतै एकटा लड़का उदेसे आएल छेलौं मुदा लड़िकाक नउए बहिरा छिऐ। मन भटकि गेल। आब घूमि जाएब।''

तैपर बहिराक माए कहलखिन-

''जँ बेटा-बेटी खेलाइ पाछू बेहाल रहए आ माए-बापक आदेश नै सुनए, तँ की बाप-माए ओकरा मारतै आकि बहिरा कहि छोड़तै?''

❍

कनीटा बात

कनीटा बात केते नम्हर भऽ जाइए ओ आब बुझै छी। पढ़ुआ काका बेटे जकाँ बूझै छला। जे कहै छेलियनि आँखि मुनि विश्वास कऽ लइ छला। खास कऽ पाइ-कौड़ीबला काजमे कहियो दोहरा कऽ नै पुछलनि। ओइ दिन कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे मुहसँ झूठ निकलि गेल। आरो ई भेल जे पुन: ओइ बातकेँ झूठ नै कहि देलियनि। मुदा हुनका लग कोन झूठपकड़ा मशीन छन्हि जे ओ बूझि गेला आ कहलनि बौआ, तहूँ तहिना। एतबे नै, कहि आगूमे थूक फेक देलनि।

सकपकाइत कहने रहियनि-

''की, कक्का?''

मुदा पढ़ुआ काका दोहरा कऽ किछु नै बजला जे आब बूझि रहल छी।

❍

गति-गुद्दा

सोलह बर्खक पछाति सुखदेव बम्बईसँ गाम आएल। पहुलका सुखदेवा नै जे ठोरनमड़ासँ जानल जाइ छल। ओ सुखदेव जे बम्बईक गली-कुचीसँ नोकरी करैत सोलहम जिनगी एयर पोर्ट (शिवाजी टर्मिनल) पहुँच गेल अछि। खाली नोकरीए नै नोकरी तँ ओहनो होइत अछि जे पानि पीऔनिहार गलियो-कुचीमे रहैए आ एयरो पोर्टमे। ओ सुखदेव जे होटलक मसल्ला पीसब टा नै, काजक गति सेहो आ मानसिक गति सेहो तेज केलक। ग्रेजुएत सुखदेव, आँफिसर सुखदेव, जीप-कार-ट्रकक ड्राइवर सुखदेव।

गाम अबिते सुखदेव भँजिऔलक तँ भाँजपर चढ़ल जे खुशीलाले बाबा टा एहेन रहला अछि जिनकर समांग नै बहड़ेलखिन। पुरना ढर्ड़ाक लोक खुशीलाल बाबा। जिनगी ओइठामसँ देखने जैठाम पालकी, महफा, ओसारक ओहार, घरक ओहार चलै छल। आइ की देखै छी। मन-चित मारि अपन कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैत जीब रहल छथि। जैठाम गाम हमरा छोड़ि देलक आ हम गामकेँ छोड़ि देलिऐ, एहेन बोहैत धारक त्रिवेणीक मोरपर खुशीलाले बाबाटा छथि। कनी जिरेला पछाति भेँट करबनि।

तीन बजेक समए। सुखदेव खुशीलाल बाबा ऐठाम पहुँच गोर लागि अपन परिचए देलकनि। बैसैक इशारो करथि आ सुखदेवक समाचारो सुनथि। मने-मन खुशीओ होन्हि जे अही माटि-पानिक बम्बईक शिवाजी टर्मिनलमे ऑफीसर बनल अछि। जहिना साँप अपन छन्द सुनबैत-सुनबैत पड़ा गेल मुदा गड़ूल देखबे ने केलक। तहिना खुशीलाल बाबा सुखदेवक समाचारमे हरा गेला।

बजैत-बजैत सुखदेवकेँ बूझि पड़लै जे भरिसक हम अपने खिस्सा सुनबए एलियनि। विचार रोकि पुछलखिन-

''बाबा, अपना दिसक की हाल-चाल अछि?''

जहिना पुरना संगी पाबि हृदए खोलि सभ गप करैत तहिना खुशीलाल बाबा कहलखिन-

‘‘बौआ, ऐठामक गिरहस्तकेँ कोनो गति-गुद्दा अछि। धार माटि दुइर कऽ देलक। कोसी-नहर ठीकेदार खा गेल। मौनसूनी बर्खाकेँ रौदी खा गेल। की कहबह!’’

❍

बिसवास

पनरह दिनसँ परेशान डाक्टर परमेश्वर ओना माझिल भाय-भागेश्वरक पेटक ऑपरेशनसँ परसुए पलखति पौलनि मुदा अपन अस्त-व्यस्त जीवनकेँ पटरीपर अनैमे दू-दिन सेहो लगिए गेलनि। पटरीपर अनैक मतलब भेल निश्चित समैपर निर्धारित काज करब।

साँझक सात बजैत। चाह पीब सिगरेट सुनगा पहुलक दमक धुआँ मुहसँ फेकिते रहथि की मनमे उठलनि, ऑपरेशन करैबलामे हमरो लोक जनैए मुदा अपना ऑपरेशनमे भाय-साहैबक मन किए ने मानलकनि। जखनि अपने घरक समांग बिसवास नै करत तखनि दुनियाँक अशे की? मुदा मझिलो भैया तँ ओहन नहियेँ छथि जे आँखि मूनि किछु करता।

जेते डाक्टर परमेश्वर इनारक पानि जकाँ डोलसँ ऊपर करथि तइसँ बेसीए पानि तलाव टुटल मोकर जकाँ मनमे भरि जान्हि। हाँइ-हाँइ तीनटा सिगरेट पीब गेला मुदा पश्नक उत्तरक माटि नै छूबि सकला। बिसवास करब..., नै करब..., मनमे ओझरी लगि गेलनि। जहिना नन्हकी काँट बूढ़-बुढ़ानुसक नजरियोपर नै पड़ैत आ धिया-पुता लप दऽ निकालि लैत। तहिना डाक्टर साहैबकेँ अंतिम विचार मनमे अँटकि गेलनि जे भागेश्वर भैया आन थोड़े छिआ जे लाज-संकोच करब। हुनकेसँ पूछि मन थीर कऽ लेब।

ओना भागेश्वरक आदति छन्हि जे सोझहामे पड़ित पूछि दइ छथिन जे भैया कि काका आकि बौआ, की हाल-चाल अछि। तँए जखने पुछता आकि टटके प्रश्न पूछि देबनि।

आराम करैत भागेश्वर गपे केनिहारक प्रतिक्षा करैत रहथि। डाक्टर परमेश्वरकेँ लगमे देखिते पूछि बैसला-

"बाउ, की हाल-चाल अछि?"

हाल-चाल सुनिते डाक्टर परमेश्वर व्याख्या करैत बजला-

‘‘हाल-चाल कथी रहत भैया, अहाँसँ निवृत्ति भेलौं आ एकटा बात मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल।’’

बिच्चेमे भागेश्वर टोकलकनि-

‘‘एते भूमिका बन्हैक कोन प्रयोजन, कोन बात?’’

डाक्टर परमेश्वर कहलखिन-

‘‘पेटक ऑपरेशनक डाक्टर हमहूँ, केतेको करबो केलौं, केतौ अजस नै भेल। मुदा अहाँ जखनि पुछलौं तँ पुछै छी, दोसरकँ किए पसिन केलिऐ?’’

भागेश्वर कहलखिन-

‘‘बौआ, अहाँ साधारण श्रेणीक लोक नै छी जे किछु कहि देब। दू रूपमे ज्ञान काज करै छै। गुण आ निर्गुण। अहाँ छोट भाए छी, जखनि पेट काटितौं तखनि छाती दहैलियो सकै छेलए। मुदा देखैक जे भार देलौं से अही दुआरे जे अपन जेठ भाय बूझि नीकसँ तकतियान करब।’’

❍

कचहरिया भाय

कचहरिया-भायकेँ देखिते नीरस बाजल-

''भाय, ओहूँकेँ कचहरिया उतरी भरिसक नहियेँ उतरत?''

कचहरिया भाय आ नीरस लंगोटिया संगी। भरिसक नै साल तँ महिने, नै महिना तँ दिने, नै दिन तँ घंटे-मिनट नीरसे पैघ हेतनि। जिनका जनम-टिप्पणि लिखाएल हेतनि तिनका ने आ जिनका नै लिखाएल हेतनि ओ तँ अपने टीपत। कचहरिया-भाय बच्चेसँ चंगला से नीरसमे कम छल। जहिना बगुला पोखरि वा पानिक किनछरि धड़ैत तहिना एकठाम रैन-बसेरा रहितो कचहरिया-भाय कचहरीक लाट पकड़ि लेलक। नीरसक प्रश्न कचहरिया भाइक मन हौड़ि देलक। दुनियाँ बड़ीटा छै, झूठ-सच चलिते रहतै। चलबो केना नै करतै? कोनो की अन्हार इजोत एकदिना छी जे ओरा जाएत। तखनि तँ भेल जेतए छी तेतए कुहेसकेँ भगा कऽ राखी। तहूमे नीरस लंगोटिया भैयारी छी, कोन दिनक कोन गप एहेन हएत जे नै बूझल हेतै। रसे-रसे मनकेँ सोझ करैत बाजल-

''बौआ नीरस, रहल तँ रस, नै तँ बेरस। आब अपना सभ अंतिम घाटक घटवार भेलौं। भगवान तोरा सन बेटा सभकेँ देथुन जे कन्हाक भार उतारि अपना कन्हापर लऽ लेलक।''

आगूक बात बजैले कचहरिया भाइक ठोर पटपटाइते रहै आकि बीचेमे नीरस टोकि देलक-

''अहाँक बेटा की दब छथि?''

जेना कचहरिया भाइक छाती चहकि गेलनि। फुटल कसताराक दही जकाँ मुहसँ निकललनि-

''रसगुल्ला रसक चहटि शुरूहेसँ लगि गेल जे अपनो बुझै छी। हलवाइक कुकुर जकाँ एक्कोटा रुइयाँ देहमे नै अछि मुदा चहटिओ तँ चुहटि कऽ चोहटबे करत।''

बाल-बोध जकाँ नीरस मनकेँ फुसलबैत-बहलबैत बाजल-

“अच्छा भाय, एकटा कहू जे जुआनी आ बुढ़ाड़ीमे की बूझि पड़ैए?”
सह पबैत कचहरिया-भाय भगैतक पलगाँइ जकाँ बाजल-
“गेल रे जुआनी फेर केतए पएब।”
नहलापर गुलाम फेकैत नीरस भाय बाजल-
“कृपा पाबि कियो मूकसँ वाचाल बनैए तँ कियो वाचालसँ मूक!”
कहि मुड़ी डोलबैत दुनू गोरे जिनगीक कुन्ज भवनमे घुमए लगला।

❍

गुहारि

कमला कातक नवटोलीक गहबर बड़ जगताजोर। सएह सुनि अपनो गुहारि करबैक विचार भेल। भाँज लगेलौं तँ पता चलल जे तीनू वेरागन -सोम, बुध आ शुक्र- भगता भाउ खेलाइ छथि मुदा शुक्र दिन तँ साक्षात् कालीयेक आवाहन रहै छन्हि। मन थीर भेल। डाली लगबए पड़ै छै तँए ओरियौनक विचार भेल। मन भेल जे पत्नीकेँ डाली ओरियौनक भार दियनि। मुदा बोलकेँ रोकि विचार कहलक-

“देवालयक काज छी, एकोरत्ती कुभाँज भेने गुहारियो उनटे हएत। डालीक बौस बाजरसँ किनए पड़त। मुदा सस्त दुआरे जनिजाति उनटा-पुनटा बौस कीनि लेती।”

मन उनटि गेल। अपने हाथे किनैक निर्णए केलौं।

बाजार पहुँच फूल काढ़ल सीकीक रँगर डालीक संग बेसीए दाम दऽ दऽ नीक-नीक बौस किनलौं। मन पड़ल जे भरि दिन उपास करए पड़त। चाहो तक नै पीब सकै छी। जँ पीऐओक मन हएत तँ गोसाँइ उगैसँ पहिने भलहिं पीब लेब।

तनावसँ भरि दिन मन उदिग्न रहैए। ने काज करैक मन होइए आ ने कियो सोहाइए। एहेन तनाव दुनियाँमे केकरो भरिसके हेतै।

कोन जालमे पड़ि गेल छी। तहूमे एकटा रहए तब ने। जालक-जाल लागल अछि। जमीन-जत्थाक जाल, जन-जाल, मन-जाल, तन-जाल, शब्द-जाल, अर्थ-जाल, विचार-जाल, वाक्-जाल नै जानि केते जाल बनौनिहार केते जाल बना कऽ पसारि देने अछि। एक तँ ओहिना इचना माछ जकाँ लटपटाएल छी तैपरसँ जालक-जाल! गैंचीक नजरि तँ नै जे ससरि-फसरि छछाड़ी कटैत जान बँचा सोलहन्नी जिनगी पाबि लेब। तँए नवटोलीक गहबरमे डाली लगेलौं।

गुहरियाक कमी नै। अकलबेरेसँ गुहरिया पहुँच पतियानी लगा बैस गेल। गहबरक भीतर भगत बैस धियान मग्न भऽ गेला। गहबरसँ उदेलित

भाव भगतक हृदैकेँ कम्पित करैत। गुहारि करए बाहर निकलला। हाथमे जगरनथिया बेंतक छड़ी नेने। भगत गुहारि शुरू करैत कहलखिन-

“भगत-अश्रमसँ श्रमक बाट पकड़ि चलि जाउ। आगू किछु ने हएत।”

भगतक पछाति डलिवाह कहथिन-

“पाछू घूमि नै ताकब। केतबो जोगिन सभ कानि-कानि किए ने बाजए मुदा घूमि नै ताकब।”

हमरो नम्बर लगिचाएल। मुदा एक्के वाक् सुनि उत्सुकता ओते नहियेँ रहए जेते नव वाक् सुनैक होइत। अनेरे मनमे तुलसीक विचार उठि गेल। कहने छथि जे जेकरा जंजाल रहै छै तेकरा ने चिन्ता होइ छै। जेकरा नै छै?

तही बीच भगत सोझहामे आबि गेला। पछिले बातकेँ दोहरबैत एकटा नव बात पुछलनि-

“छूटि गेल किने?”

बिनु तारतमे बजा गेल-

“हँ।”

विदा भेलौं। बाटमे विचारए लगलौं जे अश्रमक अर्थ की होइ छै। मुदा कोनो अर्थे ने लगल। हारि कऽ ऐ निष्कर्षपर एलौं जे एक सोगे आएल छेलौं दोसर नेने जाइ छी।

गाम अबिते टोल-पड़ोसक लोक भेँट करए आबए लगला। सभ एक्के बात पुछथि-

“की भेल?”

किछु गोटेकेँ प्रश्ने बना कहलियनि-

“अश्रमक अर्थे ने बुझलौं। अहीं कहू।”

मुदा जेते मुँह तेते रंगक उत्तर भेटए लगल। सुनैत-सनैत मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। पछाति जे कियो पुछथि तँ कहए लगलियनि-

“जहिना छेलौं तहिना छी। जहिना छेलौं तहिना छी।” ❍

शिवजीक डाक-वाक्

चौदहो भुवन भ्रमणमे काग-भुशुंडी बौराएल रहथि की तैबीच शिवजीक संग गुरुओजी पहुँचलथि। सज्जा सजल शव जकाँ काग-भुशुंडी, ने गुरुएजी आ ने शिवजीए दिस तकलनि। मणिक जोहमे अपने समुद्रमे डुमकी लगबैत रहथि। दलदल पानि सदृश गुरुजी, तँए कोनो आनि-पीड़ा नै भेलनि। मुदा पाछू पिछड़ैत काग-भुशुंडीकेँ देखि शिवजीक क्रोध सीमा तोड़ि बहरा गेलनि। जहिना हुकड़ैत ढेनुआर गाए चुकड़ैत बच्चाकेँ देखि मलकार (पोसिनिहार) जँ नै दुहै तँ कि गाए कोकणि नै जाएत? के दोखी? शिवजीक बाक-डाक नै। काग-भुशुंडी लेल धैनसन। चाँकि नै देखि काग-भुशुंडीकेँ शिवजी कहलखिन-

"जा रे अभगला! तों अजेगरोक कान कटलह।"

❍

सोग

आने दिन जकाँ तड़गरे प्रोफेसर लीलाधरक नीन टुटलनि। जेना आन दिन नीन टुटिते ओछाइन छोड़ि टहलए विदा भऽ जाइ छला से आइ नै भेलनि। ओछाइन छोड़ैसँ पहिने मनमे उठि गेलनि

'एक्कैस मार्च। पचास बर्ख पूरि एकावनममे प्रवेश कऽ रहल छी।' मनमे उठलनि जिनगीक पचास बर्ख। जँ सएए बर्खक आधार बनबै छी तैयो अदहा टपि गेलौं। मुदा से केना हएत? जिनगी तँ विभाजित अछि। तँए एकक पछाति दोसरमे प्रवेश आ पछिलाक नीक-अधलाक समीक्षा। मुदा हिसाबे उकड़ूमे पड़ि गेल अछि। सए बर्ख जीबे करब तेकर कोनो गारंटी अछि...। तखनि अदहा केना मानब। लगले नजरि नोकरी दिस बढ़लनि। जइ दिन नोकरी शुरू केने रही तइ दिन बतीस बर्खक जोड़ने रही। गुन भेल जे तीन बर्ख बढ़ि गेल। पैंतीस बर्खक नोकरी भऽ गेल जइमे पच्चीस बर्ख पूरि गेल अछि। दसे बर्ख बँचल अछि। अहू पच्चीस बर्खमे आठ बर्ख ओझ्रे-गुनी खेलक। सत्तरह बर्खक नोकरीकेँ नोकरी बुझलौं, जखनि कौलेज सरकारी भेल। एकाएक बीस गुना जिनगीमे उछाल आएल। साठि हजारक नोकरी कोनो मामूली छी, जैठाम अखनो केते पेटेपर खटैए। मुदा जहिना तीआरि जालक ओझरी जे छोड़बै दुआरे लोक पूजीओ गमा फेकिए दैत अछि। मुदा से तँ लीलाधरकेँ नै भऽ पाइब रहलनि हेन। ओझरी जेते छोड़बए चाहथि तेते अमती काँट जकाँ ओझराइते जाइ छेलनि।

तखने पत्नी ओछाइन छोड़ि, कपड़ासँ पौछैत मुँह, ऐनामे देख, कटोरिया धोंधि नेने फुदकैत विजयक खुशीसँ मुस्की दैत लीलाधरक ओछाइन लग पहुँच मुँह दिस तकलखिन।

टक-टक आँखि तकैत लीलाधर पत्नीकेँ नै देखलनि। मनुख कि चिड़ै आकि कौछ छी जे अंडा दऽ पड़ा जाए। पड़ाएल आकि पड़ौल गेल ऐ प्रश्नमे लीलाधर ओझराएल।

टकटकी देखि पत्नी डरि गेली। मुदा तैयो अपन अर्ज निमाहैत बजली-

“कथीक सोग...?”

प्रोफेसर लीलाधर बजला-

“किछु ने?”

जिनगीक सोग। मरैओ बेर तक पत्नी सिरे चढ़ि खेती, काल्हि धरि केलौं? यएह ने जे तेते हित-अपेछित बना लेलौं जे सालक दस प्रतिशत कमाइ भोज-भातमे चलि जाइए। तैपर अपनो सभ दिन अनके खेबै, से केहेन हएत। मुदा सभ दिन जँ भोजे खेबै तँ विद्यापतिक हिसाब (अदहा जनम हम नीन गमाओल) कँ की करब। ने किछुओ पाइ जमा कऽ रखि सकलौं आ जेहो केलौं ओ दस बर्ख बादे भेटत। की तीनू बच्चाकँ आगूक शिक्षा दऽ पाएब!

❍

पनचैती

परसूसँ सौंसे गाममे यएह चरचा जे ई पनचैती केना हएत। एक दिस सोनेलाल बाबा आ दोसर दिस विधायक जीक प्रतिनिधि। तहूमे खासे मसियौत सेहो छियनि।

विधायकजी भिन्ने गजुआइत जे एक जातिक भोँट प्रभावित हएत। मुदा अपनो आदमी किछु नै कहत सेहो बात तँ नै। नीक हएत अस्पताल धऽ ली। भेँट करए सभ एबे करत, ओतइ सँ फरिया देब।

सोनेलाल बाबाक दियाद-वाद, जाति-समाज इन्दिरा आवासक भाँजमे। तँए या तँ गबदी मारि दैत या तँ सोझहा एबे ने करैत। पुतोहुक दुआरे बेटोसँ मिलान नहियेँ जकाँ। मुदा बिना फड़ियौने तँ टुटल गाड़ीक पहिया जकाँ गेबे करत। 'काँकोड़ रोटी'

चेहरासँ सोनेलाल बाबा अस्सी बर्खक बूझि पड़ै छथि मुदा छथि छिआसठिए बर्खक। जरल मनमे आगि उठलनि। तीन साल पहिने इन्दिरा आवास वएह प्रतिनिधि विधायक जीक सोझहामे गछलखिन। सोनेलाल बाबा तही दिनसँ बौआइ छथि। मुदा अखनि धरि नै भेटलनि। वेचाराक मनक धधड़ा ओइ दिन भभकि उठल जइ दिन सोनेलाल बाबा पुछलखिन-

''नेताजी, दौगैत-दौगैत टाँग टूटि गेल। आबो कहू?''

प्रतिनिधि कहलकनि-

''आइक युगमे बिना खुऔने-पीऔने काज चलै छै?''

सोनेलाल बाबा बजला-

''ई बात ओइ दिन किए ने कहलौं जइ दिन हमरो हाथमे भोँट छल।''

''अखनि एते छुट्टी नइए, दोसर दिन बात करब।''

पगलाएल सोनेलाल बाबा की केलनि से अपनो नै बुझलखिन।

❍

कनमन

साढ़े चारि बजैत। हाइ स्कूलसँ अबिते सुधीरक नजरि दरबज्जापर बैसल बाबा श्याम सुन्दरपर पड़लनि। दरबज्जा-अँगनाक बीच मोड़पर सुधीर तेकठी जकाँ ठाढ़ भेल। केम्हर डेग बढ़ौत से फड़िछेबे ने करैत। बाबाकेँ पुछियनि जे किए मन खसल अछि, आकि किताब रखि कपड़ा बदलि आबी। रस्तेसँ भूखो-पियास लगल अछि। नबे बजेक खेलहा छी।

तेकठीक तीनू खुट्टाक बीच अपनाकेँ सुधीर पौलक जे दूटाक कनोति तेकठी नाओं धरबैए जखनि कि तेसरक नाओं गोरी भऽ जाइ छै, जेकरा ऊपर लाद लादि लदाना दइ छै। बाबाक बात बूझब सभसँ जरूरी अछि, मुदा बरदाएल हाथे कइए की सकबनि। कपड़ा बदलब ओते महत नै रखैए तँए एना करी जे बाबाकेँ कहियनि जे हमहूँ आबि गेलौं जइसँ जाबे ओ अपन बात बजता ताबे किताव रखि आएब। कनी डेगमे झाड़ आनए पड़त। सहए करैत बाजल-

“बाबा, किए मन खसल अछि?”

कहि किताव रखए आँगन गेल। किताव रखि श्याम सुन्दरक लग आबि सुधीर बाजल-

“बाबा, मन खसैक कारण की अछि?”

आस-निआसक बीच श्याम सुन्दर ओझड़ाएल रहथि, तँए नजरि खसल छेलनि। पोताक प्रश्न भारी पबै छला। चालीस बर्खक संगी हेरा-फेरीमे जहल चलि गेल छेलनि, तेकरे सोग रहनि। मुदा बाल-बोध लग बाजी वा नै बाजी। छिपाएब झूठ हएत नै छिपाएब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। नीकक चर्च हेबाक चाही, अधलाक तँ फलो अधले हएत। एहनो तँ भऽ सकैए जे छिपबैत-छिपबैत छिनारक छिनरपनीए छीप जाए। मुदा एहनो तँ भऽ सकैए जे एक-दोसराक अधला छिपबैत-छिपबैत छिपारेक समाज बनि जाए। तत्-मत् करैत श्याम सुन्दर कहलखिन-

‘‘बौआ, अखने सुनलौं जे रूपलाल जहल चलि गेल। मिरचाइक झाँझ जकाँ ओहए मनकेँ मलीन केने अछि।’’

श्याम सुन्दर जे कहि अपनाकेँ हटबए चाहथि से लगले नै हटलनि। कारण भेल जे जहलक नाओं सुनि सुधीर दोहरा देलकनि-

‘‘किए रूपलाल बाबा जहल गेला?’’

सुधीरक प्रश्न श्याम सुन्दरकेँ ज्वर आनि देलकनि मुदा ज्वार नै बनि तुड़छैत ज्वारि तँ आबिए गेल रहनि। बुझबैत कहलखिन-

‘‘एते पुरान रहितो रूपलाल समैकेँ ठेकानबे ने केलक। पुरना चालिसँ आब काज चलैबला छै! बुझथुन जे केहेन दादासँ पल्ला पड़ल।’’

❍

अजाति

गुरु काका, बड़का काका, पढ़ुआ काका, लाल काका, भैया काका, दोस काका, संगी काका सभ एकठाम बैस रघुनाथक गप चलौलनि। गुरु काका बजला-

“शेतानक चरखी अछि रघुनत्था।”

सह मारैत बड़का काका कहलखिन-

“एहेन छुतहर एकोटा ने कुल-खनदानमे भेल।”

एकमुहरी गप देखि दोस काका कहलखिन-

“एना गौं-गौं केने नै हएत। किछु स्पष्ट विचार करए पड़त।”

अपन भार हटबैत पढ़ुआ काका टपकि गेला-

“भने दोसक विचार छन्हि। लाल भाय अहीं अपन निर्णए सुना दियौ।”

गंभीर होइत लाल काका फैसला देलखिन-

“रघुनाथ अजाति भऽ गेल।”

❍

पटोर

किशोरी ऐठाम बिआहक काज तेतरी सोहो देखलक। पक्का पति-भक्त तेतरी। राति-दिन पतिक विचारक सेवा हृदैसँ करैत।

रंग-रंगक पटोर साड़ी पहिरल देखि लाड़-झाड़ करैत पति-गुलेतीकेँ तेतरी कहलक-

"हमरो पटोर साड़ी कीनि दिअ?"

अनुकूल रखै दुआरे गुलेती अनुकूल शब्दक सहारा लैत सोचए लगल जे जहिना अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै तहिना ने दुनू बेकती छी। रंगक चमकी देखि ओ (तेतरी) लटुआएल अछि आ अनुकूलक अपने लटुआएल छी। मुदा छी तँ दुनू एक्के रंग। जखनि एक्के रंग छी तखनि बीचमे बाधा कथीक। जेहने अपने पटोर साड़ीक सम्बन्धमे जननिहार, किनिनिहार छी तेहने ने ओहो अछि। तखनि तँ भेल जे की परसै छी तँ फूसि। तहन कनी लगा कऽ देबै...।

ओना अपन आँट-पेट देखि गुलेती सहमल नै। बुझलक जे जहिना गुलेतीक शिकार तहिना ने मुँहक शिकार होइए। दुनूक सोल्हैनी गारंटी थोड़े अछि। तहूमे चोबीसो घंटा संग रहनिहारि नारीक नश-नश नै बुझी तँ ई केकर दोख। जहिना कलीसँ गुलाब छिटैक छिटकए लगैत तहिना चौअन्नियाँ मुस्की छिटकबैत गुलेती बाजल-

"केहेन पटोर लेब?"

जहिना स्वर्गक आशामे लोक, सभ किछु दान करैले तैयार रहैए तहिना पटोरक आशामे तेतरी भेल। हजारोक भीड़मे जहिना प्रेमी प्रेमीकेँ पकड़ि सटि जाइत, तहिना गुलेतीक हृदैमे तेतरी सटि गेल। गोदीक बच्चाक सुतैक भार जहिना गोद लैत तहिना अलिसाएल तेतरी बाजलि-

"जेहने किशोरीक अँगनामे देखलिऐ।"

"एक्के रंगक देखलिऐ?"

"नै, सभ रंगक रहै।"

एकटा संगी रहने ने लोक हराइए जौं तइसँ बेसी होइ तँ केना हराएत? जेतइ हराए लगत तेतइ संगी भेट जेतै। पत्नीकेँ हराइत देखि गुलेती बाजल-

''अहाँक विचार नै मानब तँ दुनियाँमे केकर विचार मानै बला अछि। अहाँकेँ हाथ पकड़ि अनने छी तहन विचार केना नै मानब। अहाँक मांग मानि लेलौं। कागतमे लिख लेलौं। जइ दिन बजार जाएब तइ दिन किनने आएब। खाली बजार जाइ घड़ी पुरजी मोन पाड़ि देब अहाँ। अच्छा एकटा बात बूझल अछि, ओ साड़ी (पटोरबला) एक्के बेर पहिरला पछाति खींचल जाइ छै से? से सभ दिन केतए खींचबै?''

साड़ी खींचब सूनि तेतरीक विचार ठमकि गेल। बाजलि-

''तखनि ऐबेर छोड़ि दियौ। आगू साल अगते कीनि देब।''

भार घुसकैत गुलेती दुनू जाँघपर हाथक शान पिजबैत बाजल-

''कहू तँ भला, अच्छा अहीं मोन पाड़ि दिअ जे एतेक उमेरमे अहाँक कोन गप कहिया कटलौं?''

केकरो गप अपने टूटि जाइ छै तँ ऐमे केकर दोख। हँ तखनि ई बात जरूर भेल अछि जे गामक चालि बदलल! पहिने गाममे चोरकेँ अबिते जएह देखलक सएह चोर-चोर हल्ला करए लगै छल मुदा अर्थक चक्का तेहेन दिशा पकड़ि लेलक जे सामाजिकता तहस-नहस भऽ गेल अछि। जहिना राम-रावणक बीचक जे तीर चलए आ दस-दस बीस-बीस गर्दनि कटि हवामे उधियाइत एकठाम भऽ सटि जाइत तेहने ने भऽ रहल अछि।

(ई कथा, ''पटोर'' मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्नाजी लेल...)

❍

फुसियाह

सुभितगर समए भेने अनुकूल काजक वृद्धि जिनगीकेँ आगू मुहेँ ओहिना ससारैए जहिना प्रतिकूल भेने विपरीत दिशामे पाछू मुहेँ ससारैए। मुदा किछु भेद तँ भइए जाइत अछि। ओ छी कम-बेसीक गणित।

साँझक आठ बजैत। ओना माघक आठ राति कहबैए मुदा से नै सौन-भादोक आठ साँझे कहबैए। आठ घंटा दमकल चला घरपर आबि कमलदेव गद्‌गदाएल मने पत्नी-सुचित्राकेँ कहलखिन-

"पहिने चाह पिआउ, पछाति एकटा गप कहब?"

जहिना कर्मकेँ वचन सदति दबैत रहैए तहिना सुचित्रा चाह बनबैसँ पहिने हठ करैत बजली-

"सुनल रहत तँ चाहो बनबै बेर विचारब, ओना खट-खुट मन केने कहीं चाहो ने दुइर भऽ जाए। से नै तँ कहिए दिअ"

पत्नीक बात सुनि कमलदेव सोचमे पड़ि गेला। शुभ काजमे अशुभ बात ओहन करामात कऽ दैत जहिना एकटा छिक्का हाइ-कोर्टक फैसला उनटा-पुनटा दैत अछि। हो-ने-हो कहीं अही गपक धूनिमे चाहक धूनि बिसरि जाथि। तखनि तँ दिन-भरिक मेहनति तँ मेहनैते रहि जाएत, बजला-

"अनेरे कोन झूठ-फूसिक फेरिमे पड़ै छी पहिने चाह पिआउ, तखनि दुनियाँ-दारीक गप-सप्प हेतै।"

मुस्की दैत सुचित्रा उत्तर देलखिन-

"तँए ने पहिने घर-परिवारक काज निबटा लिअ चाहै छी। अहीं सन पुरुख हम थोड़े छी जे भरि दिन छाती भरे खटै छी आ गामक लोक फुसियाहा कहैए।"

पत्नीक बात सुनि कमलदेवक मनमे झोंक एलनि। जहिना गुम हवामे सुरूजक ताप अपन करामात करैत तहिना एक तँ कमलदेवक मनमे

चाहक झोंक चढ़ल तैपरसँ पत्नीक मुहेँ फुसियाह सुनि झोंक तेज भऽ गेलनि, बजला-

''ने अहाँ कहने कटहर हएत आ ने गौआँ कहने बरहर हएत। कटहर कटहरे रहतै, बरहर बरहरे रहतै। एक रंग आँठी-कमड़ी भेनहि की हएत?''

पतिक विचारकेँ आंकैत सुचित्रा बजली-

''अहाँ तमसा गेलौं। तमसाउ नै। लोक जे अहाँकेँ फुसियाह कहैए तेकर कारण अछि जे काजक हिसाबसँ समए नै दइ छिऐ, घड़ीक हिसावसँ समए दऽ दइ छिऐ।''

पत्नीक विचारकेँ अँकैत कमलदेव दोहड़बैत पुछलखिन-

''कनी फरिछा कऽ कहिऔ?''

सुचित्रा कहलकनि-

''केकरो खेत पटबैक जे समए दइ छिऐ ओ खेतक हिसाबसँ समए दियौ। काजक समए दोसर होइ छै आ घड़ीक समए दोसर।''

❍

गति-मुक्ति

सज्जासनसँ उठि आँखि मीड़िते बाबा रमचेबलाकेँ उठबैत कहलखिन-

“रे रमचेलबा, दिन-रातिकेँ लोक एकबट्ट करैक भाँजमे अछि आ तूँ ढेंग जकाँ पड़ले रहमे?”

आँखिक काँच-सूखल काँची पोछैत रमचेलबा ओछाइनेपर सँ बाजल-

“जे कहै छह से तँ कइए दइ छिअ। तखनि ढेंग किए कहै छह?”

जाधरि बाबा नहलापर गुलाम फेंकितथि ताधरि ओछाइनपरसँ उठि रमचेलबा लगमे पहुँच गेलनि। बाबा कहलखिन-

“रे तों तँ हमर ने कऽ दइ छेँ, तइसँ थोड़े हेतौ।”

मुँह बाँबि जहिना चूजा अहार मंगैत तहिना रमचेलबा पुछलकनि-

“तब?”

रमचेलबाक जिज्ञासा देखि बाबा कहलखिन-

“अपना लेल कर।”

बाबाक पक्का चेला रमचेलबा। एक पाइ बाम-बुच नै। मुड़ी डोलबैत बाजल-

“अच्छा, गिरह बान्हि लेलिअ। मुदा ढेंग किए कहलह?”

रमचेलबाकेँ मानै जोकर भाषामे बाबा कहलखिन-

“देख, जाबे गाछक शील काटि कऽ रखल रहै छै ताबे ढेंग कहबै छै। ओकरे जखनि आड़ा-मशीनपर लऽ जा तख्ता चीड़ा नाव बना पानिमे दौड़बै छै तखनि ओहो अपन भरि पेट आदमीकेँ धारमे झिलहोरि खेलैत पार करै छै। मुदा एकटा बात कहि दइ छिऔ, जे जे पुछबाक होउ से पूछि ले, किए तँ एको मिसिआ जीबैक मन नै होइए।”

पाछू उनटि रमचेलबा तकलक तँ बूझि पड़लै जे जाबे जीबैक लूरि नइए ताबे जीबै केना छी। तहूमे बाबाक संगे। मुदा बूढ़-बुढ़ानुसक बिसवासे केते जँ कहीं टटके आँखि मूनि देलनि तखनि तँ अपनो मनमे आ हुनको मन लगले रहि जेतनि। पुछलकनि-

''बाबा हौ, गति-मुक्ति केकरा कहै छै?''

रमचेलबाक प्रश्न सुनि बाबा विह्वल भऽ गेला। भावावेषमे कहए लगलखिन-

''चौबीसो घंटा जँ समए संग मनोनुकूल जिनगी जीबए लगी, यहए भेल गति-मुक्ति।''

❍

चौकीदारी

तीन दिन झंझारपुर-मधुबनी दौड़-बरहा केला पछाति चौकीदार रामटहल दास पछिला आठ मासक दरमहो आ आनो-आन भत्ता उठा सात बजे गामपर माने घर पहुँचल। रस्तेसँ निआरि लेलक जे आरो जे हेतै से पछाति हेतै पहिने भरि पोख सूतब। तीन दिनक दौड़-बरहा कोनो लज्जति देहक रहए देलक। ने नहाइक ठेकान आ ने खाइक। ठाकुरो जीकेँ एक लोटा जल नै चढ़ा सकलौं। खैर जे हौ, जे पूत हरबाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल। मुदा ओछाइनपर पहुँचैसँ पहिने जे काज अछि से तँ करए पड़त। मुँहक रोहानीसँ पत्नी परखि नेने रहनि तँए पाँचटा तरुआ-भुजुआक ओरियानमे जुटि गेली।

स्नान-धियान, तिलक-चानन, पूजा-पाठ कऽ रामटहल दास भोजन करए आँगन पहुँचल। अँगनाक चुहचुही देखि मनमे खुशी भेलै। मुदा चुहचुहीक कारण नजरिपर पड़बे ने केलै। पत्नीपर आँखि पड़िते आँकि लेलक जे चुहचुही आँगनक किरतबे नै आँगनवालीक किरतबे भेल अछि। चिक्कनि माटिक ठाँओं, नमगर-चौड़गर आसनपर बैसिते पाँचटा तरुआ, पाँचटा भुजुआक संग अचार-चटनी सजल थारी आगूमे देखलक। देखिते पत्नीसँ किछु पुछैक विचार रामटहल दासकेँ भेल मुदा थारी रखि राम पिआरी सुतैक ओछाइन सेरियौनाइकेँ काजक एक नम्बर सूचीमे रखने, तँए अखनि गप केना करितथि।

सरकारीकरण नै भेला पूब चौकीदारी समाजक दायित्व बूझल जाइ छल। टैक्सक रूपमे चौकीदारी छोट-पैघ किसानसँ लेल जाइ छल आ पनरह रूपैआ मासिक वेतनक रूपमे देल जाइ छल। अन्हरिया सप्तमीसँ लऽ कऽ इजोरिया षष्टी धरि -पनरह दिन- गामक पहरा चौकीदार करै छल। गाममे दूटा चौकीदार तँए एककेँ हाथमे फरसा आ दोसरकेँ हाथमे भाला रहै छल। घरसँ निकलिते चौकीदार जोरसँ टाँहि दइ छल जइसँ गामोक लोक बूझि जाइ छेलै जे पहरूदार पहरा दइले निकलि रहल

अछि। नित्र टुटिते बीड़ी-तमाकुलक संग केतौ माल-जालक तकतान तँ केतौ लघी-विरती शुरू भऽ जाइ छल। टोले-टोले घूमि-घूमि चौकीदार ठहकबो करैत आ जगेबो करैत। जँ केतौ चोर अभड़ैत तँ संग मिलि आगू-आगू दौगबो करैत। विल्कुल पारदर्शी कारोबार छल।

ओछाइनपर पति-रामटहल दासकेँ देखिते रामपियारीक मन सिहरल। मन सिहरिते विचारक भाव बदलल। एक तँ कमासुत पति तोहूमे आठ मासक बकिऔताक गरमी। बदलल मनमे उठलनि जानक जंजाल परिवार होइए। जानकेँ अकछ-अकछ केने रहैए। एक बोल दुनू परानी गपो करब सेहो ने होइए। मन घुमलनि। तँए कि लोक मनो-मनोरथ छोड़ि देत। सहटि कऽ पति लग आबि बजली-

"दरमाहा उठबैमे पाइओ-कौड़ी खर्चा भेल?"

पत्नीक जिज्ञासा भरल शब्द सुनि रामटहल बाजल-

"जाबे बबाजी नै भेल छेलौं ताबे आ अखनिमे बड़ अन्तर भऽ गेल अछि। सौंसे थानाक सेक्रेटरी छी। आन-आनकेँ तँ खर्चा हेबे करै छै मुदा हमरा नै होइए।"

तैपर पत्नी पुछलखिन-

"केते भेटल?"

केते भेटल सुनि रामटहल दासकेँ, जहिना सीक परहक मटकूर खसिते टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़िया जाइत तहिना भेलै। सुखक नीनकेँ छोड़ए नै चाहलक। मुदा तैयो बजाइए गेलै-

"भेटत कि अल्हुआ, धैन समाज अछि जे मुँहक लाली अछि नै तँ अठ-अठ महिना पेट बान्हि के खटत। जेकरा ऊपर-झपटी छै तेकरा ने, हमरा कोन अछि।"

❍

झगड़ाउ-झोटैला

भोरे अर्द्धांगिनिक रग्गड़सँ ठमकि लाल काका दरबज्जाक बीचला खुट्टामे ओंगठि कुही होइत मने-मन विचारै छला जे औझुका दिन भंगठले अछि। जहिना यात्रा काल भंगठल इंजनक कोनो भरोस नै तहिना पत्नीक खट-पटसँ लाल काकाक मनमे होइत रहनि। औझुका दिन केहेन हएत केहेन नै तेकर कोनो ठेकान नै। अपनो किछु हुसलौं। हुसलौं की! पावर चढ़ल छेलए। ओह: भोरे लोक राम-नाम लैत उठैए आ हमरा कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल से नै जानि। कोन एहेन पहाड़ टूटि खसल जाइ छेलै जे भोरे अढ़ौती-अढ़ा देलियनि। निअमानुसार अपन-अपन पुरौला पछातिए ने कियो दोसर दिस देखत। तैबीच हाथमे चाहक गिलास नेने मुसिकिआति पत्नीकेँ दू हाथ आगू अबैत देखलनि। जेना कोनो कोकनल खुट्टाबला घर हड़हड़ा कऽ खसैए तहिना लाल काका अकाससँ खसला। मुदा भिनसुरका तामस सोलहो आना नै मेटाएल छेलनि, तँए चाह लेल हाथ नै बढ़ौलनि। ससुराएल लोक जकाँ लाल काकाकेँ देखि लाल काकीक मनमे उठलनि जे पुरुख छिआ आकि पुरुखक झड़। हाथ पकड़ि कहबनि जे चाह लिअ। आगूमे ताड़क गाछ जकाँ ठाढ़ रहली।

जहिना नम्हर गाछक ऊपरका डारि टूटि डारि-डारिपर रूकि-रूकि कऽ निच्चाँ खसैत तहिना लाल कक्काक मन फेर खसलनि। थोड़े सबूर मनमे सेहो भेलनि जे दुपहरियाक खेनाइ नै गड़बड़ाएत। पाछू उनटि तकलनि तँ मन पड़लनि जे एहेन-एहेन झगड़ा तँ बेसी काल होइए। मुदा खेनाइ-पीनाइमे कहाँ कहियो बाधा भेल। ओह! तामसमे बिसरि गेल छेलौं। पत्नीक चौअन्नियाँ मुस्कीक जवाबमे लाल काका अठनियाँ ठाह दैत, हाथक गिलास पकड़ैत बजला-

"मीठगर चाह अछि किने?"

लाल काकाकेँ मुँहमे गिलास लगबैसँ पहिने लालकाकी ठमकल रहली, मुदा मुहसँ गिलास हटबिते, पुछलखिन-

‘‘ठोरमे ठोर सटैए किने?’’

चाहक गरमी लाल काकाकेँ चढ़िते रहनि। अवसरकेँ बिनु गमौने बजला-

‘‘दूधसँ नै चीनीसँ।’’

❍

घबाह ट्यूशन

घिड़नीक तिनकमिया बंशीक घबाएल माछ जकाँ बुधियार काका बीस बर्खक नोकरीक पछाति घबाएल मने अपना दिस तकलनि। घबाएल मन ऐ लेल जे प्रतियोगिता परीक्षामे बइसै जोकर बेटा भऽ गेलनि। उचित तँ यएह ने बनैत जे वयस देखि-देखि अपन विषयक बात बेटोसँ पूछि लेब। एकर मतलब ई नै जे छौड़ाकेँ बापक पएरक जूतो आ अंगो अँटि जाइ छै।

जइ दिन नोकरी शुरू केलौं, तीन मन धान महिना गौआँ मिलि दइ छला। राजा-रजवारक गाम नै, जे स्कूल-अस्पताल खुजत। परिवारो तहिना छल, गौआँक मुँह देखि कोनो धरानी गुजर करै छेलौं आ गामेक बच्चाकेँ पढ़ेबो करै छेलौं। अपनो बूझि पड़ै छल आ समाजो शिक्षक बुझै छला।

अपने ऊपर दुरिमतिया चढ़ल कि समाजक ऊपर चढ़ल आकि सरकारक ऊपर चढ़ल से बुझबे ने करै छी। जे विद्यालय या तँ बेकती-विशेषक वा सामाजिक स्तरपर चलै छल ओकरा आगू केना बढ़ौल जाए। मूल प्रश्न छल। मुदा भेल की? खाली संस्कृते विद्यालयकेँ कहबै आकि मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि जेनरल विद्यालयकेँ, सभटा एक्के सिरहाने पेटकुनियाँ लधने अछि।

प्रकाशकेँ सोर पाड़ि बुधियार काका कहलखिन-

''बौआ, आब तोराले दुनियाँक बहुत बाट खुजैक समए आबि गेलह मुदा समए एहेन बनि गेल अछि जे जेते सहयोगक जरूरति तोरा पड़तह, ओते नै दऽ सकबह। अपनो जुआन भेल जाइ छह, अपनो तँ किछु सोचिते हेबह?''

पिताक विचार सुनि प्रकाश बाजल-

''बाबूजी, ट्यूशनक नव क्षेत्र तँ बनिते जा रहल अछि, बूझल जेतै।''

प्रकाशक विचार सुनि, कनी काल गुम रहि बुधियार काका बजला-

''बौआ, तीनटा विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ा अपनो शिक्षक बनलौं, मुदा आब लड़कीक शिक्षा बढ़लासँ ओहो घबाह भेल जा रहल छै।''

❍

दादी-माँ

सत्तरि बर्खक दादी-माँकेँ अखनो वहए चुहचुही गाममे बूझि पड़ै छन्हि जे चुहचुही सासुरमे सभकेँ बूझि पड़ैत। जइ दिन रंगल वस्त्र, भरल पेट, काजर लगौल आँखिसँ गाम देखलनि ओ जीते-जी केना बिसरि जेती।

ओना दादी-माँकेँ परिवारमे दू पीढ़ीसँ मुखतियारी चलि अबैत मुदा पलखतिक दुआरे ऐ बातपर नजरिए ने कहियो गेलनि। कारणो अछि जे दू तरहक जिनगी लोककेँ भेटै छै, एककेँ बनल-बनाएल आ दोसरकेँ टुटल-फुटल। टुटल-फुटल घरकेँ दादी-माँ सभ दिन चिकने करैमे लागल रहली तँए सासुरक सुख दिस धियाने ने गेलनि। एक तँ औहुना जे कुरसीपर बैस जाइए ओ थोड़े बुझै छै जे कुरसीक पुवरियो पार छै आ पछवरियो पार। तँए जिनगीकेँ तीनू पार देखैक लूरि हेबाक चाही। मुदा से दादी-माँ केँ नै छन्हि परिवारक सबहक धौजनि सुनैक अभ्यस्त छथि तँए आश्वासन तँ सभकेँ दइते छथिन, मुदा जे पहिने बिसरै। सत्तरि बर्खक अपनाकेँ नै बूझि दादी-माँकेँ छोड़ल केचुआ जकाँ लहलही छन्हिए। तहूमे कोरा-काँखकेँ सभ दिन बच्चा सभकेँ लैत रहली तँए किए नै रहतनि।

छह बर्ख पहिने परिवारमे एकटा गाए एलनि। जहिना मनुखसँ लऽ कऽ बाध-बोन धरि लक्ष्मी छिड़ियाएल छथि तहिना दादी-माँ गाएकेँ बूझि सेवा करए लगली। थैर-गोबर अपन काजक सूचीमे लऽ लेलनि। छबे बर्खक दौड़मे आइ दसटा गाए खुट्टापर छन्हि। पहिने एकटाकेँ थैर-गोबर करैक अभ्यास छेलनि अखनि दस टाक भऽ गेल छन्हि, किए मनक चुहचुही कमतनि।

ओना अखनि धरि सभ तूर परिवारक काजमे सटि चलै छन्हि मुदा दुनू पुतोहुओ आ भाएओमे खट-पट हुअ लगलनि से भनक छन्हि मुदा जेकरा जे मनमे हेतै से तेहेन पाऔत, तँए धैनसन। दुनू बेटो आ पुतोहुओक बीच उठैत विवादक कारण पिता-शिवशंकर नीक जकाँ बुझैत

रहथि। जैठाम लाखक विधायक, सांसद, वेपारी, ठीकेदार करोड़ कूदि अरबमे टहलि रहल अछि तैठाम मनक उछाल स्वाभाविके छै। तँए गुम्म छला।

जहिना दृष्टिकूट विश्राम बेर होएत तहिना दादी-माँकेँ बूझि पड़लनि। पति-शिवशंकर सोझहासँ गुजरिते रहथि आकि दुनू बेटा, ताल ठौकैत पहुँचल। अधरस्तेपर दादी-माँ अँटकि गेली। शिवशंकर पुछलखिन-

''तोरा दुनू भाँइक बीच एना किए होइ छह?''

पिताक प्रश्नसँ दुनू भाँइ प्रकाशो आ जोगियो एक दोसरपर दोख मढ़ए लगल। तही बीच आँगनमे सेहो दुनू पुतोहु डंका पीटए लगली। शिवशंकर बूझि गेला जे अँगने आगि असमसान तक जाइ छै। भार हटबैत शिवशंकर दुनू भाँइकेँ कहलखिन-

''माएसँ पूछि लहक?''

अपना-अपनीकेँ प्रकाशो आ जोगीयो दुनू भाँइ बाँहि पसारैत दादी-माँकेँ पुछलक-

''माए, तूँ केनए?''

गरमाएल साँस छोड़ैत दादी-माँ बजली-

''केम्हरो ने। अपने दिस।''

शिवशंकरो आ दादीओ-माँ, दुनू बेकती विचारए लगलथि जे समए एहेन दुरकाल बनि रहल अछि जे रातिक कोन बात जे दिनोमे सुरक्षित रहब कठिन भऽ गेल अछि, तैठाम घरेमे कुकुर-कटौज करत तँ जानत अपने। आब कि जीबैक कोनो लिलसा अछि, कमाइ छी खाइ छी।

❍

पटोटन

अद्राक पहिल बर्खा। मास्टर साहैब आ बड़ाबाबू दुनू गोटे एक्के मोटर साइकिलसँ गामसँ झंझारपुर जाइत रहथि। साते किलोमीटर झंझारपुर तँए दुनू गोटे गामेसँ जाइ अबै छथि। थानाक बड़ाबाबू नै कोर्टक बड़ाबाबू देवनन्दन आ हाइस्कूलक शिक्षक प्रेमनन्दन। ओना दुनू गोटे शहरूआसँ बेसी गमैइए छथि मुदा तैयो कलप कएल कपड़ा पहिरि कऽ एबे-जेबे करै छथि।

पँचकोशीमे सिंहेश्वरक नाओं एकटा नीक घरहटियाक रूपमे लोक जनैत। ओना नाउएँ तँ नाओं छी, तइमे तँ कमी नै भेलनि अछि मुदा परदेशीयाक कमाइ आ इन्दिरा आवासक चलैत काजमे कमी तँ भइए गेलनि अछि। उमेर बेसी भेने मनमे खुशीए होइत रहै छन्हि जे भने काज कमि रहल अछि। एक तँ परदेश भगने नव घरहटिया नै बनि रहल अछि, दोसर हमहीं सभ जे पुरना पाँच गोटे छी सएह केते सम्हारब।

ब्रह्मपुर गाममे प्रवेश करिते बुन्दाबुन्दी पानि शुरू भेल। बड़ाबाबू ड्राइवरी करैत आ मास्टर साहैब पाछूमे बैसल। बून तँ गोटगर पड़ैत रहै मुदा कम-सम। बीत-डेढ़ बीतक दूरीपर बून खसै तँए कपड़ा सोखने चलि जाइत मुदा जेते आगू बढ़ै छला तेते पानिओ बेसीयाएल जाइत। बढ़ैत-बढ़ैत सिंहेश्वरक घर लग अबिते अँटकि जाएब नीक बुझलनि। सड़केपर गाड़ी लगा दुनू गोटे सिंहेश्वरक दरबज्जा दिस बढ़ला। दरबज्जा कि मालक घर। आधा घरमे माल बन्हैत आ अदहामे दरबज्जा बनौने। दरबज्जा कि एकटा चौकी मात्र। सिंहेश्वर अपने दरबज्जेपर। चारसँ चुबैत बूनकेँ निहारि-निहारि देखैत जे रौदमे फाटि गेल अछि आकि कौआ खोदने अछि। मुदा लगले मन पड़ि गेलनि आद्रा आबि गेल, घर कहाँ छाड़लौं। तखने दुनू गोटे पहुँचला। चौकीपर सँ उठि सिंहेश्वर दुनू गोटेकेँ बाँहि पकड़ि चौकीपर बैसबैत अपनो बैसला। तड़तड़ौआ बर्खा शुरू भेल। कलप कएल शर्टपर खढ़क चुबाटसँ दाग जकाँ हुअ लगलनि। एक तँ

वेचारेकेँ अपने मनमे दुख होइत हेतनि जे केना साल खेपब तैपरसँ हमहूँ भारी बना दियनि से उचित नै। दागे लगत तँ की हेतै, कोनो कि केरा-दारीमक दाग छी जे नै छूटत। मुदा बड़ाबाबूकेँ मुहसँ बजा गेलनि-

''अहाँक नाओं पँचकोसीमे अछि सिंहेश्वर भाय, मुदा अपना घरक हालति एहेन बनौने छी?''

बड़ाबाबूक विचारसँ सहमत होइत सिंहेश्वर बाजल-

''बड़ाबाबू, गामसँ लोककेँ भगने गाममे काज बढ़ि गेल अछि, मुदा काजक धूनि तेहेन पकड़ि लेलक जे ठेकाने ने रहल जे बरसात आबि गेल। आब पानि छुटैए तँ नै छाड़ल हएत तँ पटोटनो तँ दइए देबै।''

❍

मुसाइ पंडित

मुसाइ पंडित गाम भरिमे विख्यात छथि। ओहन पंडित जिनकर बात मुसाइए पंडितक नाओंसँ विख्यात अछि।

मध्यम् जातिक मुसाइ पंडित, माएक कोरपच्छु बेटा भेने दौजी फड़ जकाँ तीन सालमे माए आ सात सालमे पिताक श्राद्ध केलनि। मुदा बाल-बिआहक शुभ फल भेट गेल रहनि। पिताक श्राद्धसँ तीन मास पहिने बिआह भऽ गेलनि। जँ कहीं तीन मास पछुऐतथि तँ सिमरिया गाड़ी जकाँ मास नै कऽ पबितथि मुदा भाग्य तँ भाग्य छी, से मुसाइ पंडितकेँ सुतरलनि। जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरा तँ पोथी-पतरा काज दइते छै जे बिनु-माएओ-बापबलाकेँ सुतरल। मुसाइ पंडित पिताक श्राद्धक तीन दिन पछाति ससुरकेँ अरियातए काल पुछलखिन-

''बाबू, आब तँ यएह सभ ने माता-पिता भेला, हमरा की हएत? भाए-भौजाइक हालति अपनो गाममे देखिते हेथिन।''

जमाएक प्रश्न सुनि कमलाकान्त गुम्म भऽ गेला। मने-मन विचारए लगला जे बेटी-जमाएक भार उठाएब भारी होइ छै। फेर मन घुमलनि जे भगिनमान तँ कुलश्रेष्ठ होइए। मुदा लगले मन बदलि गेलनि धी-जमाए-भगिना। जहिना घरमे सिदहा नै रहने भूखक लहरि जोर मारै छै तहिना आगूक जिनगी मुसाइकेँ जोर मारलकनि। दोहरबैत बजला-

''बाबू, किछु बजलखिन नै?''

कमलाकान्तक मन फेर बहटलनि। पत्नीसँ पूछि लेब जरूरी अछि मुदा से खोलि कऽ केना समधियौरमे जमाए लग बाजब। बेटोकेँ तँ पूछि लेब अछि। मुदा पुतोहु बेरमे पुछबे ने केलौं आ बेटी-जमाए बेरमे किए पुछबै। मन बनिते बजला-

''दुनू भाय-भौजाइकेँ बजबियनु। आखिर माता-पिताक परोछ भेने तँ वएह सभ ने माता-पिता भेला।''

मुसाइ दुनू भाँइकेँ पुछलनि। एक तँ औहुना लोकक घराड़ी घटल जाइ छै तैपर जँ बढ़ि जाए, ई के नै चाहत। दुनू भाँइओ आ भौजाइओ मुसाइकेँ सासुर जाइक आदेश दऽ देलक। गाए-नेरूक मिलान तँ ठेहुने-पानि दुहान।

कमलाकान्त संगे चलए कहि पुछलखिन-

"कपड़ो-लत्ता लेब।"

मुसाइ बजला-

"हँ, हँ, जेते सरधुआ कपड़ा अछि ओ जँ नै लऽ लेब तँ ऐठाम मूसे-दिवार खा जाएत।"

एक तँ ओहिना मुसाइ सहलोल, तैपर सासुरक विद्यालय पहुँच गेला। सासुरमे जँ सारि-सरहोजिसँ गलथोथरिमे हारि जाएब तँ कोन डोराडोरिबला भेलौं। जहिना विषुवत रेखाक समान दूरीपर दुनूमे दिशा समान मौसम होइत तहिना अन्हार-इजोतक बीच सेहो होइत अछि।

पच्चीस बर्खक अवस्थामे मुसाइ सासुरसँ मुसाइ पंडित भऽ दूटा धिया-पुता नेने गाम आबि गेला। जहिना फुटलो खपटाक जरूरति समए पाबि होइ छै तहिना मुसाइ पंडितक जरूरति गाममे आइ भेल।

मौसमी बिमारीक जानकारी दइले गाममे बहरबैया सभ औता। जखनेसँ मुसाइ पंडित सुनलनि तखनेसँ मटिया तेल देलहा कुत्ता जकाँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलनि।

जहिना समए निर्धारित छल तहिना कार्यक्रम शुरू भेल। अभ्यागती सुआगत सभकेँ भेलनि। बारहो मासक मौसमी बिमारी आ ओइसँ पथ-परहेजक नीक जानकारी देलखिन। गाममे नव फल भेटल। बीचमे बैसल मुसाइ पंडित सुनैपर कम धियान देने रहथि। संगोसोरमे जहिना लोक हरेलहो जगहपर गपे-गपमे पहुँच जाइत तहिना मुसाइ पंडित सेहो पहुँच गेला। हड़लनि ने फुड़लनि उठि कऽ बीचमे ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ होइते बैसनिहारक आँखि पड़ए लगलनि। दुनू हाथसँ शान्ति बना रखैक इशारा दैत बजला-

‘‘अभ्यागत लोकनिक विचार उत्तम अछि, सभकेँ अनुकरण करक चाहियनि।’’

अपन समर्थन पाबि बाहरी लोकनि आरो अगिला बात सुनैले जिज्ञासासँ कान ठाढ़ केलनि। मुदा जे पहिने बाजत ओ चोर गाम-घरक खेलक मंत्र छै। तँए आँखि, कान तँ मुसाइ पंडित दिस सभ देलनि मुदा मुँह घुमौनहि रहला। मुसाइ पंडित लेल धैनसन। कहिया लोक हमर बात सुनलक आ देखलक। सुनह आकि नै सुनह, मनक उदगार छी, बजबे करब। मुदा सएओ आँखि भीष्म पितामह जकाँ गड़ल देखि सम्हरैत मुसाइ पंडित बजला-

‘‘आम-जामुन इलाकाक हाड़-पाँजर टुटब, किसानी काजमे साँप-कीड़ा काटब, हाड़मे पैसल जाड़कैं सेहो तँ देखए पड़त, ईहो तँ मौसमीए बिमारी भेल किने?’’

गौंआँ वक्ता बूझि जोरसँ सभ थोपड़ी बजौलक मुदा थोपड़ी सुनि मुसाइ पंडित अकवकमे पड़ि गेला जे लोकक थोपड़ीक अवाज की छै। हास हँसी आकि हँसी हास।

❍

भरमे-सरम

बच्चामे बाबू केतबो पढ़बैक परियास केलनि मुदा हम नहियेँ पढ़लियनि। अपनेसँ जे कनैठी दऽ नाम-गाम सिखा देलनि ओ अखनो कानेपर रखने छी।

पचासम बर्ख चलि रहल अछि। परुसाल शिक्षामित्रक उजैहिया उठल। चौक-चौराहा, हाट-बजार, गल्ली-कुच्ची सगतरि एक्के हवा बहए लगलै। जहिना हवा पीब अधमरुओ साँप फनफना उठैत तहिना मनमे उठल। उठिते गर अँटबए लगलौं। एहेन बोहैत गंगामे स्नान नै कऽ लेब तँ सभ दिन पापीए रहि जाएब। दरबज्जापर बैसल विचारिते रही आकि सुन्दर भायकेँ औगताएल अबैत देखलियनि। हुनका देखिते अपन चिंता पड़ा गेल। दया उमड़ि गेल। वेचारे एक्को कौड़ीक आदमी नै रहला। आचार्यक उपाधि लैयो कऽ गोबर-माटि भेल पड़ल छथि। नोकरी नै भेलनि। लग अबिते पुछलयनि-

''भाय, केम्हर-केम्हर?''

चौअन्नियाँ मुस्की दैत बजला-

''बेतरनी पार होइक लग्न आबि रहल अछि। डारि चुकल बानरक जे गति होइ छै वएह गति अवसर चुकल मनुखोकेँ होइ छै। तँए गंगामे हाथ धोइ लिअ।''

धारक मोइन जकाँ विचार चकभौर लेलक। पुछलियनि-

''से की?''

कहलनि-

''अगिला साल तेते शिक्षा मित्रक बहाली हएत जे एक्कोटा पढ़ल-लिखल नै बँचत।''

असमंजसमे कहलियनि-

''भाय, हमरा तँ नामे-गामटा लिखल होइए।''

ठाहाका मारि कहलनि-

“डेर-दू हजार खरच करू तेहेन सर्टिफिकेट आनि कऽ देब जे पहुलके बहालीमे भऽ जाएत।”

रूपैआ दऽ देलियनि सर्टिफिकेट आनि देलनि। भैकेन्सी भेल।

बेटो बी.ए.पास केने अछि। दुनू बापूत गामेक स्कूलमे दरखास दइक विचार केलौं। कागतक जखनि मिलानी केलौं तँ बेटाक उमेरसँ दू बरख कम अपन उमेर! मुदा एहेन अजोध बात बजबो केतए करब। भरमे-सरम चुप्पे रहि गेलौं।

❍

देखल दिन

मृत्युसँ छह मास पूर्व मुनेसर काकाकेँ बेटा लग मन उबियेलनि तँ असगरे दिल्लीसँ गाम विदा भेला। परिवारसँ समाज धरि सभकेँ अचरज लगलनि जे मनमे की चढ़ि गेलनि जे असगरे एते साहस केलनि। असगरे विदा होइक कारण भेलनि जे बेटाकेँ पाँच दिन समए नै, एक तँ औहुना बैंकमे कम छुट्टी होइ छै तैपर अपनो कारोबार ठाढ़ केने अछि। पुतोहु सहजे पुतोहुए छन्हि, भरि दिन एअर-कंडीशनमे बैस देश-विदेशक खेल देखब आ साज-श्रृंगार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करै छथि। मुदा मुनेसर काकाक साहसक कारण ईहो भेलनि जे एकेटा गाड़ी दिल्लीसँ सकरी पहुँचा देतनि। सकरी तँ औहुना घरे-अँगना भेलनि।

गाम अबिते मुनेसर काका देखलनि जे घर-अँगना तँ खंडहर भऽ गेल, केतए रहब। अंडी-बगहंडी, भाँग-धथुरसँ भरल अछि। जखने बोनाह भेल तखने साँप-छुछुनरिक संग बिढ़नी-पचैहिया हेबे करत। बाप-पुरुखाक डीहक दशा देखि दुख भेलनि जे जखनि घरे नै तखनि मनुख केना रहत। जखनि मनुक्खे नै रहत तँ बाप-पुरुखाकेँ के चिन्हत। मने-मन विचार ऊपर-निच्चाँ होइते रहनि कि एक गोटेकेँ रस्ता धेने जाइत देखलनि। ओना दस साल पहिने देखनै रहथि मुदा मनुखोक बुनाबटि तँ अजीव अछि। जहिना बीस बर्खक अवस्था धरि बाढ़िक आगमन रहैए तहिना साठि बर्खक पछाति रौदियाहक।

दुनू सएह तँए पुछैक जरूरति दुनूकेँ भेलनि। कमलेशकेँ ऐ लेल पुछैक जरूरति भेलै जे आन-गामक जँ रहितथि तँ रस्ते-रस्ते एला, चलि जइतथि। ठाढ़ भऽ निहारि किए रहला अछि। जखनि कि मुनेसर काकाकेँ जरूरी भेलनि जे जखनि पुस्तैनी गाम एलौं, परिवार चलि गेल तँ चलि गेल, समाजो अछि आकि ओहो मेटा गेल। मोबाइल जकाँ नै भेल जे अगुआ कऽ किए फोन करब। पाइ खर्चा होइ छै की नै। ओइ सम्प्रदाय सदृश अछि किने जे अगुआ कऽ जेकर नजरि पड़त ओ पहिने

अभिवादन करत। मुदा भेल दोसरे, जहिना पनचैतीमे एक संग अनेको बजनिहार बाजए लगैत वा मोबाइलेपर दुनू दिससँ दुनू परानी बाजए लगैत, तहिना मुनेसरो काका आ कमलेशो एक्के बेर दुनू दिससँ बाजल। आग्रह करैत कमलेश अपना ऐठाम तीन दिनक अभ्यागतीमे लऽ गेलनि।

गाम-समाजक कुशल-समाचारक संग मुनेसर काकाक मनक जड़िमे अपन परिवार नाचए लगलनि। कोन धरानी बाबू, एकटा साधारण पोस्ट मास्टर रहि तीस बीघा खेत बनौलनि। दस गाम बीच एकटा पोस्ट ऑफिस मनिआडरक रूपैआ अगुआ-पछुआ, संग-संग जिनकर रूपैआ दिअ जाथि दू-चारि आना ओहो देबे करनि। आमदनी बढ़ने मुनेसरोकेँ पढ़ा-लिखा हाकिम बनौलनि। तेसर पीढ़ी चलि रहल छन्हि। डंडी तराजू जकाँ परिवारकेँ तौल रहल छथि जे एक पीढ़ी (पिता) समाजमे कि सभ केलनि। बीचक की भेल आ आइ उजड़ि-उपटि गेल। जहिना चढ़ैत जुआनीक जिनगी बौरा जाइ छै तहिना ने अबैत मृत्युकेँ रोग-सोग सेहो भेटए लगै छै।

कमलेशक घर देखि मुनेसर काका चिन्ह गेलखिन जे ई तँ संगीयेँक घर छी। पुछलखिन-

“बाउ, परिवारमे के सभ छथि?”

कमलेश बाजल-

“तीन पीढ़ीक सभ छथि।”

मुनेसर काकाकेँ आगू बकार नै फुटलनि। जहिना तकितो आँखिमे ज्योति नै रहै छै तहिना भेलनि।

❍

फज्झति

सोनेलाल आ जीयालालक बीच करीब बीस बर्खसँ चिन्हा-परिचए छन्हि। ओना दू गामक छथि मुदा सटल गाम रहने खेतो एकबधू आ हाटो-बजारमे भेँट-घाँट होइते रहै छन्हि। कहैले दुनूक बीच अपेछो छन्हि, एकबधू खेत रहने अड़िओ छथि मुदा दुनू गामक विपरीत सामाजिक चालि-ढालि रहने बात-विचारमे अन्तरो छन्हिए।

कामेकेँ धाम आ कर्मेकेँ धर्मक विचार रहने जीयालाल कम आँट-पेटक सम्पति रहनौं ने कहियो बेकारी महसूस करै छथि आ ने गुजर-बसर करैमे परेशानी होइ छन्हि। जहिना मौसमी फल बारह-मसीओ होइत अछि तहिना मौसमी खेतीकेँ बारह-मसीआ दिस ससारैमे दिन-राति लगल रहै छथि। जखनि कि सोनेलाल सोलहन्नी मौसमी किसान छथि।

अन्नक खेती संग जीयालाल फलो-फलहरी आ तरकारीओ-फड़कारीक खेती करै छथि। खेतक हिसावसँ अपने भरि खेती करै छथि मुदा मेहनति बेसीआ दइ छन्हि जइसँ अदहा-छदहा बिक्रीयो-बट्टा भइए जाइ छन्हि। जइसँ आनो-आनो काज चलिते रहै छन्हि। फलक खेती केने लताम, नेबो, धात्री, अनारसक गाछ नर्सरी जकाँ रहिते रहै छन्हि। मुदा जहिना धर्मक जड़ि दया छी तहिना खेतीक जड़ि बीज (बीआ) सेहो छी, तँए फलक कोनो गाछ बेचै नै छथि। ओहिना (मंगनीए) दोसरकेँ दइ छथिन।

नेबोक एकटा गाछ जीयालालसँ सोनेलाल मंगलकनि। रस्ते-पेरेक गप छल। जीयालाल कहलखिन-

''जखनि आएब भऽ जाएत।''

साल बित गेल। ओना दुनू गोटेक बीच भेँट-घाँट होइते छन्हि मुदा गाछक कोनो चर्च नै।

दोसर साल दुनू गोटेकेँ नवानी दुर्गा-पूजा मेलामे भेँट भेलनि। चाहे दोकानपर बैस दुनू गोटेक बीच दुनियाँ-दारीक संग अपनो खेती-पथारीक

गप चललनि। जेना हराएल वस्तु भेटने देहमे पानि जगै छै तहिना सोनेलालकेँ जगलनि। दोकानपर चारि-पाँच गामक चारि-पाँच गोटे बैसल छला। सोनेलाल जीयालालकेँ कहलखिन-

''हमर बाँकीए अछि?''

बाँकी सुनि जीयालालोकेँ धक् दऽ नेबो गाछ मन पड़लनि। सुहकारैत कहलखिन-

''हँ, हँ, से तँ अछिए। भऽ जाएत।''

तेसर साल विजलीपुरक समैध ऐठाम सोनेलाल दरबज्जापर बैसल रहथि तखने मधेपुरसँ अबैत जीयालालपर नजरि पड़िते सोर पाड़लखिन। समाजो आ परिवारोक पान-सात गोटे बैसल रहथि। सोनेलालक अवाज सुनि जीयालाल सड़कसँ पछिम मुहेँ साइकिलो घुमौलनि आ विचारियो लेलनि जे फज्झति करबनि। तइसँ पहिने मनमे उठि गेल रहनि जे जखनि दुइए गोटेक बीचक काज छी तखनि दुनियाँकेँ जनबैक कोन जरूरति। जरूर किछु बात छै तँए फज्झतिसँ जड़ि पकड़त। दलानक दावामे जीयालाल साइकिल लगबिते रहथि आकि सोनेलाल महाजनीक स्वरमे कहलकनि-

''हमर बाँकीए अछि!''

सोनेलालक स्वरो आ जगहो देखि जीयालालक देह अगिया गेलनि। एक तँ औहुना पुरुखक आदति रहल अछि जे घरोवाली लग आ सासुरो-समधिऔरोमे अलंकारिक भाषाक प्रयोग करैए। नजरि तेज करैत जीयालाल, लूरिगर सिपाही जकाँ जे दुश्मनेक हाथक हथियार छीनि प्रहार करैए तहिना समाजकेँ अगुअबैत बजला-

''अहूँ सभ अपन समधिक हाल सुनू। बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाएबला भऽ गेला, मुदा अखनि धरि एकटा नेबोओक गाछ नै छन्हि।''

❍

अकास दीप

दिवालीक एक दिन पहिने गाममे रंग-बिरंगक अकासदीपक खुट्टा गड़ल देखि मनोहरोक मनमे उठलै जे अपनो ऐठाम जराबी मुदा लगले मन घेरा गेलै जे पावनि-तिहार तँ परम्पराक हिसाबे चलैए, जँ से नै तँ एके समाज माने एक जातिक समाजमे एकेटा पावनि किछु गोटेकेँ होइ छन्हि, किछु गोटेकेँ नहियोँ होइ छन्हि। कारणो स्पष्ट अछि जे जाति दियादमे बँटल अछि। जँ दियादीक भीतर पावनिक दिन अशौच भऽ जाइए तखनि टूटि जाइए। किछु गोटे खंडित बूझि जोड़ि लइ छथि, किछु गोटे छोड़ि दइ छथि। तैसंग ईहो होइत रहै छै जे बहरबैया आमदनीपर जिनका नहियोँ होइ छेलनि ओहो नव शिरासँ शुरूहो करै छथि। ओझराइत मनोहर, बाबासँ पुछैक विचार केलक।

मनोहर हाइ स्कूलमे पढ़ैए। घरक कोनो काज करैसँ पहिने बाबासँ पूछब जरूरी बुझलक।

सात बजे साँझ। चाह पीब पान खाइते श्यामलाल गप करैक मूडमे एला। केकरो नै देखि चौक दिस जाइक विचार करिते रहथि आकि मनोहर आबि पुछलकनि-

''बाबा, एकटा विचार मनमे भेल?''

श्यामलाल पुछलखिन-

''की?''

''ऐबेर अपना गाममे सएओसँ बेसी अकास दीप दिवाली दिन बड़त!''

''ई तँ नीक बात भेल।''

श्यामलालकेँ अनुकूल होइत देखि मनोहर बाजल-

''बाबा, अपनो दरबज्जापर...?''

श्यामलाल मुड़ी डोलबैत सोचए लगला मनोहर बच्चा अछि हलहोरिमे मन उड़ि गेलै। काँच कड़ची वा पघिलल काचकेँ जेहेन साँचामे देल जाइ छै तेहने ने वस्तुओ बनैए। सोचि श्यामलाल कहलखिन-

"बौआ, जइ गाममे मटिया तेल, जेकर उपयोग गाममे खाली डिबिए टामे होइ छै, तहूक हाहाकार मचल रहै छै। तैठाम तूँ भरि राति मासो दिन डिबिया बाड़बह से केहेन हएत?"

❍

बुधि-बधिया

रामकिसुन आ देवनारायण लंगौटिया संगी। एकठाम बैस खेती-पथारीसँ लऽ कऽ कुटुम-परिवार सहितक गप-सप्प दुनू करैत। रामकिसुनक बेटा दरभंगासँ औगताएल आबि कहलकनि-

''बाबू, रूपैआक ओरियान कऽ दिअ। काल्हिए भरि फार्म भरैक समए छै।''

अपना हाथमे रामकिसुनकेँ पनरहे सए रूपैआ, पाँच सए ओरियान करब छेलनि। जैठाम लोक बेसी गप-सप्प करैए तैठाम घरक नोनो-तेल आ खेतक खरीदो-बिकरीक गप सेहो करिते अछि। मनमे भेलनि जे पैंचेक-गप अछि तँ अनका किए कहबनि। पहिने दोसेकेँ कहै छियनि जँ नै हएत तखनि बूझल जेतैक। कोनो कि पैंच-उघारक अकाल पड़ि गेल अछि जे नै भेटत। यएह तँ गुण अछि जे जेते खगल दुबराइए, महाजन ओते मोटाइए।

देवनारायणकेँ रामकिसुन कहलखिन-

''दोस, पान सए रूपैआक बेगरता भऽ गेल अछि, सम्हारि दिअ।''

देवनारायणक हाथमे रूपैआ रहबे करनि, मुदा दोससँ सूदि केना लितथि। महाजनी सूदिक गुण तँ बूझल छेलनि। कनी-मनी झूठ-फूसि धन-सम्पतिक लेन-देनमे चलिते अछि। सुहरदे मुहेँ उत्तर देलखिन-

''दोस, जखनि अपना बूझि एलौं तँ घुमाएब उचित नै हएत। मुदा इमानदारीसँ कहै छी अपना हाथमे एको पाइ नै अछि।''

रामकिसुन बजला-

''तब तँ काजमे बाधा हएत?''

तैपर देवनारायण कहलकनि-

''से नै हुअए देब?''

तखनि रामकिसुन पुछलखिन-

''कहै छी हाथ खालिए अछि तखनि विथूत केना नै हएत?''

देवनारायण कहलकनि-

“अपन ने खाली अछि, हुनकर (पत्नीक) हाथमे छन्हि। मुदा...?”

रामकिसुन पुछलखिन-

“मुदा की?”

देवनारायण कहलकनि-

“आना दर सूदि तँ महाजनीमे चलै छै मुदा स्त्रीगणकेँ तँ माएक देलहा कोसलिया रहै छै किने, तँए दू-आना दर सूदि लागत।”

सूदि सुनि रामकिसुन गुम भऽ गेला। मनमे उठलनि जे सोझ हाथे नाक नै छूब, घुमा कऽ छुअब भेल। जेते घुमौन बाट रहै छै तेते ने लोको हराइए। मुदा काज खगौने तँ जिनगी खसै छै। यएह ने परीक्षाक घड़ी छी।

❍

पहाड़क बेथा

सौनक फुहार पड़िते जहिना नरम-गरम बीच गप-सप्प शुरू होइत तहिना धारा संग निकलैत पहाड़ समुद्र दिस बढ़ल तँ कबई माछ जकाँ समुद्रो सिरा ससरि पहाड़ दिस बढ़ल। अकासक बून पबिते पानि रंग जकाँ चुहुटि धड़ैत तहिना दुनूक बीच भेल। पनचैतीक ओइ पंच जकाँ जे अपन बेथा कहए जाइत आ अनके तेते बेथा रहैत जे अपन तर पड़ि जाइत तहिना समुद्रोकेँ भेल। ओना अपन-अपन बेथा दुनूकेँ रहै मुदा सिर चढ़ल पहाड़ रहने समुद्र चुपे रहल। मनमे संतोष भेलै जे जिनगीए केहेन छन्हि तँए बेथे केते हेतनि। कनी पछुए अपन बेथा राखब। खिलैत कोढ़ी जकाँ, जे फूल बनत की फल, बिहुँसैत समुद्र पुछलक-

"भाय, बड़ तबधल देखै छी, पियास लगल अछि की?"

जहिना पियासल बटोहीकेँ कोनो दरबज्जापर पानिक लोटा सोझहा अबिते आत्माक तरास लपकि कऽ पकड़ि लैत तहिना पहाड़ बेथित भऽ बाजल-

"देखू जे सात बीतक केहेन अछि जे एक तँ अदहासँ बेसी फटले छै तैपर केहेन ठट्ठा केलक हेन?"

बेथामे नहाएल पहाड़केँ देखि समुद्र पुचकारि कऽ पुछलक-

"भैया, अहूँ जँ बेथा जेबै तँ हमरा सबहक की गति हेतै। अहींक आशामे ने हमहूँ जीबै छी?"

रसाएल समुद्र देखि छुब्ध होइत पहाड़ बाजल-

"कहू जे एहनो ठट्ठा होइ छै जे टिकमे बान्हि देने अछि, खुनलौं पहाड़ निकलल चुहिया। यएह निसाफ होइ जे मेडिकलक किताब पढ़निहारकेँ जँ कियो कहै जे अहाँकेँ सरदीओ छोड़बैक लूरि नै अछि, ई केहेन हएत।"

❍

उमकी

भोलन बाबा गंगा नहाइले निरधनमाक संग गेला। गंगामे दुनू गोटे संगे पैसला। ऐ आशासँ जे जँ बूढ़ (भोलन बाबा) भँसियेता तँ पोता निरधनमा पकड़तनि आ जँ बाल-बोध निरधनमा भँसिआएत तँ भोलन बाबा पकड़तनि। जाधरि दुनू गोटे पकड़ा-पकड़ी नै करतथि ताधरि एक कालखंड भरि संगे केना रहि पबितथि।

गंगामे पैसि निरधनमा पुछलकनि-

"एँ हौ बाबा, सभ चीजक गाछमे देखै छिऐ सभटा एक-रंग रहल आ गोटे-गोटे भुलकि जाइए?"

निरधनमाक प्रश्नसँ बाबाकेँ दुख नै भेलनि जे हमरे ठीकिया कऽ ने तँ पुछलक। मुदा हमरा ठिकिया कऽ बाल-बोध किए पूछत। जहिना जेठुआ पानि पीविते धरती पुरना खढ़केँ गलेबो करैए आ नवकाकेँ जनमेबो करैए। तहिना तँ अखनि निरधनमो अछि। ताधरि दुनू गोटे छाती भरि पानिमे पहुँच गेला। छाती भरि पानिमे पहुँचिते जेना सर्द माथ धरि पहुँच गेलनि। सर्द पहुँचिते निरधनमा दोहरा कऽ पुछलकनि-

"बाबा, जखनि छाती भरि पानिमे आबिए गेलौं तँ अहीले ने लोक एते हरान रहैए, आब घूमि कऽ कथीले जाएब, से नै तँ...?"

निरधनमाक प्रश्न सुनि भोलन बाबा हरा गेला। पानिमे जेना डूमि गेला। मनमे उठलनि जे अही उमेरमे ने बाल-बोध पानिमे नहाइले जाइत तँ उमकए लगैत। कहीं अही उमकीमे ने निरधनमा बेसी पानिमे पहुँच भँसि जाए। जँ भँसि गेल तँ फेर एहेन लोक भेटत की नै। मन रोकलकनि पहिने मुहसँ मनाही कऽ दइ छिऐ। नै मानत तँ अपने ने गंगा लाभ हएत। मुदा बुढ़ाड़ीक बाट तँ अपनो टूटि जाएत। ओकरा छोड़ि एक लोटा पानिओ देनिहार भेटत! तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे...। जैठाम ताड़ी-दारूक लाइसेंस दऽ दऽ बेरोजगारी हटौल जाइए। की ऐ रोजगारसँ मिथिलाक माटि जे बालुसँ भरि बलुआ गेल अछि, ओ उपजाऊ

भूमि बनत। जाधरि नै बनत ताधरि हम सभ ओहिना बरहमासाकेँ छहमासा बनाएब आ छहमासा चौमासा तीन मासा करैत पराती-साँझ कानि-कानि गाएब, 'माधव, हम परिणाम निराशा।'

डुमकी लइसँ पहिने बाबा निरधनमापर नजरि देलनि तँ देखलखिन जे ओ हमरे बाट ताकि रहल अछि। कहलखिन-

''एक्के बेर डूम लिहैँ। सभ तीरथ बेर-बेर गंगासागर एक बेर।''

जहिना कियो दोस्ती करए बेर गंगाक शपथ लैत, तहिना संगे दुनू गोरे गंगामे डूम लैत स्नान कऽ घूमि गाम एला।

❍

बजन्ता-बुझन्ता

पोखरिक धड़िक विशाल सिमरक गाछपर दूटा सुग्गा बैस, जतिआरए सम्बन्ध बनबैत रहए। मुदा नाम-गामक ठेकान बिनु बुझने उड़ैबलाक कोन ठेकान। तँए दुनू सहमत भेल जे पहिने अपन ठौर-ठेकानक सम्बन्ध बना लिअ तखनि कथा-कुटुमैतीक सम्बन्धक चर्च करब। दोसर डारिक सुगा लग पहुँच गेल। दुनू बुझैत जे घर-परिवारक गप आन किए सुनत। तँए कानमे कान सटा पहिल सुग्गा दोसरकँ पुछलक-

''बेरादर, तोहर नाओं की छियऽ?''

कनी काल गुम रहि दोसर कहलकै-

''उढ़ड़ाकँ गामक ठेकान होइ छै। की नाओं कहबह। तोहीं अपना विचारे रखि दैह। हमहूँ आइसँ मानि लेब।''

पहिल सुग्गा बाजल-

''बड़बढ़ियाँ।''

बड़बढ़ियाँ सुनि दोसर धाँइ दऽ पुछलकै-

''भाय, तोहर नाओं की छियऽ?''

पहिल कहलकै-

''पोसा।''

दोसर सुग्गा पुछलकै-

''पोसा केकरा कहै छै?''

पोसा जवाब देलकै-

''जे मनुखक संग रहैए।''

अकचकाइत पुछलकै-

''तब तँ पिजरामे रखैत हेतह?''

पोसा कहलकै-

''हँ, पिजरोमे रहै छै। मुदा हम ओहन पोसा छी जे बिनु पिजरेक मनुखक संग रहै छी।''

❍

चर्मरोग

एक तँ कातिकक पूर्णिमा दोसर गहन सेहो लागत। तहूमे केते साल पछाति पूर्ण-गहन लगि रहल अछि। गामक लोकक उजाहि देखि दुनू परानी दोस काका सेहो कमला नहाइक विचार केलनि। तीनिए दिन जाइ-अबैमे लागत।

दोस काका काकीकेँ कहलखिन-

''जखनि तीनिए दिनक बात अछि तखनि किए ने घरेसँ बटखर्चा लऽ जाइ। अनेरे केहेन कहाँ दोकानक खाएब। एक तँ बेचिनिहारक हाथ-पएर नीक नै रहै छै तहूमे कोन-कहाँ माछी सेहो भिनकैत रहै छै।''

दोस काकाक विचारमे अपन विचार मिलबैत काकी उत्तर देलखिन-

''अपन घर फेर अपन घर छी। कौओ मेना अपन घरक सुख बुझैए। हम सभ तँ सहजहि मनुख छी। एतबो-अचार विचार नै रखब से केहेन हएत। तहूमे तेते ने चीज-बौस महग भऽ गेल अछि जे लोक आब भरि पेट खाइए आकि मनकेँ बुझा पानिसँ पेट भरैए।''

मुड़ी डोलबैत दोस काका कहलखिन-

''काल्हि चारि बजे भोरमे गाड़ी अछि। घंटा भरि टीशन जाइमे लागत। एक-डेढ़ बजेमे सभ कियो उठि जाएब। जाबे दुनू पुतोहु बटखर्चा बनौती ताबे दुनू गोटे नहा-सोना लेब।''

काकी बजली-

''बड़बढ़ियाँ।''

कमला स्नान करक विचार, तँए दुनू परानी अबेर तक गपे-सपमे जगि गेलथि। अबेर कऽ सूतने नीनो अबेर तक खिहारलकनि। एक-डेढ़ बजेक बदला अढ़ाइ बजेमे नीन टुटलनि। घड़ी देखिते दोस काका अपन दोख घुसकबैत पत्नीपर गुम्हरला-

''अढ़ाइ बजैए, आब कखनि चुल्हि पजारल जाएत। तहूमे सभ सूतले अछि।''

दोस काका दिस अपन क्रोध नै घुसका काकी पुतोहुपर जोरसँ गरजैत बजली-

“कोन कुम्हकरणक बेटी सभ घर चलि आएल अछि, से नै जानि। कहू जे एना कऽ सिखा कऽ दुनू दियादिनीकेँ कहने छेलिऐ जे एक-डेढ़ बजेमे उठि चुल्हि पजारि बटखर्चा बना देब, से चलचलउ बेर तक सूतले अछि।”

मुदा पुतोहु लेल धैनसन। सूतलमे गारिए की, जे सुनबे ने करत। पुतोहुक चाल-चुल नै सुनि काकी अपने ठंढ़ा गेली आगू बढ़ि जेठकी पुतोहुकेँ सोर पाड़ि बजली-

“एना कऽ कहने छेलौं, से अखनि तक सूतले छी?”

भलहिं कातिक मास रोगाह किए ने हुअए मुदा जेठक राति ओहन सोहनगर थोड़े होइए। जेहेन सिनेह-सुख कातिकक निनियाँ देवीक होइए ओ जेठ जनीकेँ थोड़े होइ छन्हि। धानसँ भरल बसुधा जहिना कड़कड़ाइत रहैए तहिना ने देवीओ कड़कड़ाइत रहै छथि। ओछाइनेपर सँ जेठकी पुतोहु भकुआएले जवाब देलखिन-

“अखनि बड़ राति छै, एते किए औगताइ छथि।”

एक तँ औहुना पैंतालीस-पचास बर्खक उमेर दुनू परानी दोस काकाक, तैपर सँ पुतोहुक बात आरो ढील कऽ देलकनि। मुदा तैयो गारजनी रूआब झाड़ैत काकी छोटकी पुतोहुकेँ उठबैत बजली-

“कनियाँ, नै खाइक ओरियान केलौं तँ केलौं, मुदा निकलबो बेर तँ अपन घर-दुआर सुमझा लेब आकि सूतले रहब।”

पहुलका बात छोटकी सूतलेमे गमौलनि। मुदा अंतिम ‘सूतले रहब’ बेर नीन टूटि गेलनि। ओछाइनेपरसँ बजली-

“दीदी, सूतले छथिन?”

रातिक भुखल भोरमे जहिना छह-नंबरा कोदारि कान्हपर लऽ खढ़होरि तामए विदा होइत तहिना खिसियाएल मने दोस काका तीन दिनक धर्मक घाट पहुँचबाक विचार जगौलनि। काकीकेँ कहलखिन-

“पनरहे मिनट समए बँचल अछि, झब दऽ तैयार होउ, नै तँ जहिना बटखर्चा छूटल तहिना संगीओ आ कमलो स्नान छूटत।”

एक तँ ओहिना जेठुआ रौदमे सुखाएल केराउ, तैपर खापरिमे पड़िते जहिना भड़भड़ा कऽ उड़ए लगैत तहिना काकी भड़भड़ाइत दोस काकाकेँ कहलखिन-

“आन पुरुखक जे बोल राखब से निमहत। कियो अपना घरमे पुतोहुओ अनलक आ दान-दहेज लछमीओ अनलक। कियो तेहेन लूरिगर पुतोहु अनलक जेकरा देहेमे सभ किछु तेहेन छै जे परिवारकेँ शिखरपर पहुँचबैए। अहाँकेँ आँखिमे कोन चर्मरोग भऽ गेल अछि जे चूनि-चूनि पुतोहु अनलौं?”

पत्नीक बात सुनि दोस काका सहमि गेला। मुदा सासुर, समधियौर आ पत्नी लग जँ मुँह बन्न भऽ गेल तँ पुरुखे कथीक। मुदा एको डारिक पत्ता धरिक बोध तँ पत्नीकेँ हेबे करै छन्हि जे करनी-धरनीक सीखमे सीखिते छथि। मुदा तैयो दोस काका अगुअबैत बजला-

“जाएब की नै?”

लपकि कऽ काकी बजली-

“ढौआ जेबीमे लऽ लिअ आ झनझनबैत चलू!”

❍

शंका

चालीस बर्खसँ संग-संग रहनौं श्याम काकाकेँ काकीपर अखनो शंका बनले रहै छन्हि। ओना सोलहन्नी शंका तँ नै मुदा तैयो शंका तँ शंके छी। सोलहन्नी ऐ लेल नै जे परिवारक आन काजमे एको पाइ शंका नै रहै छन्हि, मुदा पाइ-कौड़ी खर्चक भाँजमे तँ रहिते छन्हि। जइसँ आइ धरि कहियो मुट्ठी खोलि नै धरबै छन्हि।

जाधरि माए जीबै छल ताधरि पुतोहुक हाथमे कहियो जरूरीसँ बेसी कोनो वस्तु नै जाए देलकनि। कारण छेलनि जे अपने जकाँ कुशल गृहिणी बनबए चाहै छेली। कुशल ऐ लेल जे कम-सँ-कम वस्तुमे जीवन-यापन करैक लूरि भेलासँ जिनगीक गाड़ी समुचित ढंगसँ चलैए, से चलैत रहनि।

आब तँ सहजे नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर भरि गेल छन्हि, मुदा तखनि किए शंका छन्हि? ओना ओ बुझै छथि जे घरसँ बाहर धरि जोड़ि चलैक लूरि जेकरा होइ ओ कुशल गारजन भेल, मुदा से काकीकेँ रहितो किछु विशेष सिनेह नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ रहने अवगुण तँ छन्हिए। ओना श्याम काकाकेँ अपन इच्छा कहियो दोकान-दौड़ीसँ नोन-तेल करैक नै रहलनि, आब तँ सहजे नहियेँ छन्हि। तँए काकीए दोकान-दौड़ीक नोन-तेल करै छथिन। दोकान-दौड़ीक करैक पाछू दोसरो कारण छन्हि। ओ ई छन्हि जे कनियाँ-पुतराक की मांग हेतनि से हुनका लग तँ बाजि सकै छथि, मुदा हमरा लग थोड़े बजती।

काकीओ कम नै ने छथिन, दोकानक (परिवारक खर्चक) सभ समान कहि पाइ जोड़ि कऽ लऽ लइ छथिन आ तहूपर सँ किछु उधारी केने अबै छथिन। उधारीक कारण होइ छन्हि जे काजक वस्तु कहि पुतोहु चलबाकाल कहि दइ छथिन जे चौकलेट, नवका विस्कुट दोकानमे बड़ सुन्नर एलैए। पुतोहुक आग्रह केना काकी नै मानथिन। जइसँ किछु ने किछु उधारी दोकानक भइए जाइ छन्हि।

तगेदा भेलापर श्याम काका बुझबे करै छथि आ देबे करै छथिन। मुदा मनमे कुवाथ तँ भइए जाइ छन्हि जे एते धिया-पुताकेँ चसकाएब नीक नै।

भोरे की फुड़लनि की नै, उपराग दैत काकी श्याम काकाकेँ कहलखिन-

''एते दिनसँ एकठाँ रहलौं, मुदा भरि मन विश्वास कहियो ने भेल?''

काकीक बातकेँ गौर करैत श्याम काका पुछलखिन-

''से केना बुझै छी?''

श्याम काकाकेँ आगू बजैले रहबे करनि आकि बीचेमे काकी टपकि पड़ली-

''मुट्ठी खोलि मुट्ठा कहियो मुट्ठीमे आबए देलौं।''

❍

ओसार

बीस बर्ख नोकरीक पछाति वसन्त भाय दू मंजिला घर बनौलनि। दू मंजिला बनबैक कारण छोट घराड़ी। कोठरी मात्र चारिएटा।

सभ परानी मिलि वसन्त भाय घरबासो लेता आ परदेशो छोड़ता। रहैक घर आ जीबैक अपन अनुकूल कारोबारक कमाइ कमा अनने छथि। आठ बजे राति घरवासक समए छै।

घरवासक सभ ओरियान जुटा एकठाम सभ जुटि गप-सप्प शुरू केलनि। आइ दोसर गपे की हएत? वसन्त भाय माएकेँ कहलखिन-

''माए, परिवारमे आब पोता-पोती धरि भऽ गेलौ। कौआ-मेना जकाँ केते दिन जीवितौ। सभसँ सिरगर परिवारमे तोंही छेँ, बाज कोन कोठरी लेमे?''

एक तँ ओहिना माएक मन उधियाएल जे जेते दिनका दुख लिखल छेलए से कटलौं। आब तँ लिखलहो कटल। धिया-पुताकेँ जे हेतै अपन कऽ लेत। हमरा जीबैत धरि तँ घरक दुख मेटा गेलै। सौंसे परिवारपर आँखि खिड़बैत माए बजली-

''बौआ, कोठरी तोंही सभ लैह, ओसारक एके भाग बहुत हएत?''

अपन जीत देखैत पुतोहु झाड़-झाड़ैत बजली-

''माएकेँ कहियो घरसँ सिनेह भेलनि जे हेतनि?''

अपन जीत माए सोहो देखैत। सभ दिन सहीटमे रहलौं, चललौं-फिड़लौं, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे जे सीढ़ीपर ऊपर-निच्चाँ करैत टाँग-हाथ तोड़िली, एहेन वुधियारि हमहीं छी। पुतोहु दिस देखैत बजली-

''कनियाँ, कहुना भेलौं तँ बाले-बोध भेलौं। एकटा उझटो बात बाजब तँ हम नै बरदास करब तँ आन करत। हमरा लिऐ सभसँ नीक ओसारे। सभ दिन राति-विराति घरक चौबगली घुमै-फिड़ै छी, घर-अँगना टहलै छी, अन्हार-धुनहारमे ऊपर-निच्चाँ करब नीक हएत।''

❍

छोटका काका

दियादिक दसो भैयारीमे मुनेसर सभसँ छोट, तँए सभ छोटका काका कहै छन्हि। जाधरि भैयारीक सभ जीबै छेलनि ताधरि कहियो छोट-पैघिक बात मनमे नै उठलनि। उठबो उचित नहियेँ। मुदा जखनि उमेर बढ़लनि, भैयारीक नओ भाँइ दुनियाँ छोड़ि देलखिन तखनि तँ उठबो उचिते छेलनि आ उठबो केलनि। उठलनि ई जे जखनि सभ भाँइ छला तखनि जँ छोटका काका कहै छल तँ कहै छल मुदा आब किए कहैए। जँ से कहैत रहल तँ ऑफिसक चारिम श्रेणीक कर्मचारी जकाँ बड़ाबाबू कहिया बनब? साठि बर्खक उमेर टपलौं, माथो कारीसँ उजरा गेल मुदा छोटका काकाक छोटके काका रहि गेलौं। एक तँ औहुना छोटकासँ सझिला, सझिलासँ मझिला, मझिलासँ बड़का बनैमे केते टपान अछि तैपर अखनि धरि एको टपान नै टपलौं। देहक रंग-रूपसँ बाबा बनैक खाढ़ीमे आएल जाइ छी मुदा पीराड़क गाछ जकाँ बाढ़ि कहाँ अबैए।

असमंजसमे पड़ल मुनेसरक मनमे उठल। प्रचार प्रसारक जमाना आबि गेल अछि नकलीओ असली बनि बजारमे दौड़ रहल अछि तँए जँ किछु करब नै तँ ओहिना रहि जाएब। भीखमंगो तँ नहियेँ छी जे जन्मेसँ बाबा कहबए लगब। अपन पैरबीओ अपने केना करब। अनेरे लोक धरखनाह कहए लगत। मुदा जे विचार अपने उठि रहल अछि ओ हुनका -पत्नी- कहाँ उठि रहल छन्हि। ओ तँ छोटकी काकी सुनि आरो मुस्की दैत रहै छथि।

पत्नीकेँ सोर पाड़ि मुनेसर कहलखिन-

“देखियो जे, घर-परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि छोटके कक्का कहैए से उचित भेल?”

छोटका काकाक मनमे रहनि जे स्त्रीगण जानि दसठाम औहुना बजती। तइसँ अपन काज ससरत। मुदा छोटकी काकी गबदी मारि देलनि। केतौ किए बजती। अपन लाभ के छोड़ैए जे छोड़ितथि।

काकीकेँ कहि छोटका काका कान पाथि देलनि, जे किम्हरोसँ तँ हवा चलबे करत। मुदा केतौ चाल-चूल नै।

मास दिनक पछाति पुन: छोटाक काका काकीकेँ मन पाड़ैत दोहरौलनि-

''कहने जे रही तेकर सुनि-गुनि कहाँ केतौ पबै छी?''

एक दिस छोटका काकाक उदास मन, दोसर दिस काकीक ओलड़ैत-मलड़ैत। दोसरकेँ अनुकूल बना किछु कहबोमे आनन्द अबै छै। मुदा जहिना पुरुखकेँ जेठ भेने आनन्द अबै छै तहिना तँ स्त्रीगणोकेँ छोट भेने अबै छै। जँ नै अबितै तँ किए भौजाइकेँ सभ एक लाड़नि लाड़ि दइए। भलहिं एक लाड़निक बदला सात लाड़नि किए ने खाए मुदा होइ तँ सएह छै। छोट भेने एते लाभ तँ होइते अछि जे जेठ जकाँ अशिष्ट बोलीसँ बँचैए। मुनेसरक मनकेँ बुझबैत काकी बजली-

''अच्छा देखियो ने, समए केतौ भागल जाइए। भदबरिया मेघ कि कोनो साँझ-भोर तकैए।''

जहिना चाह पीब मन तँ मानि जाइए मुदा पेट थोड़े मानत। टकटकी लगा मुनेसर छोटकी काकी (पत्नी) दिस देखैत रहला।

❍

सीमा-सड़हद

खेते-पथार जकाँ आनोक सीमा-सड़हद होइ छै। मुदा किछु मानबो करैए तँ किछु अतिक्रमणो करैए। किछु बुझिनिहार बुझितो तोड़ैए तँ किछु बिनु बुझनौं तोड़ैए।

इंजीनियरिंग कौलेजसँ रिटायर भेला पाँच साल पछाति सुधीर काका गाममे रहबाक विचार केलनि। विचार अपने नै केलनि, काकीक दबाबमे केलनि। कारण भेल जे राजधानीक शहरमे अपन मकान किनैकाल मनमे ऐबे ने केलनि जे राजधानीक शहर राजधानीकरण भऽ जाइ छै। सभ तरहक राजधानी बनैक लक्षण आबि जाइ छै।

अपराधीक भाँजमे पड़ि सुधीर काकाक जे धन लूटेलनि से तँ सबूर केलनि जे बाढ़िक पानि जकाँ आएल-गेल, मुदा दुनू परानी मारि तेहेन खेलनि जे राजधानी छोड़ि गाम दिसक बाट धेलनि।

दुनू परानी गाम तँ आबि गेला मुदा इंजीनियर रहने मनमे रहबे करनि जे गामो-समाज तँ सएह मुदा से नै भेलनि। बाहरे जकाँ गामोमे बूझि पड़नि। भातिजकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"मनोज, गाम अही दुआरे एलौं जे अपन दर-दियाद, सर-समाजमे हब-गब करैत जिनगी ससारि लेब। मुदा...।"

सुधीर काकाक विचार मनोज बूझि गेल। मुदा समुचित उत्तर नै देब उचित बूझि, प्रश्नकेँ बहटारि बाजल-

"काका, गामक लोकमे ओते सूझ-बूझ छै जे...?"

मनोजक उत्तरसँ सुधीर काकाकेँ संतोष नै भेलनि। दोहरौलनि-

"नै बौआ, किछु दोसर बात छै?"

मनोज कहलकनि-

"काका, जाधरि गाम-समाजक सीमा सड़हद बूझि अपन सीमा-सड़हद नै बनाएब, ताधरि...।"

❍

रमैत जोगी बोहैत पानि

की मनमे एलनि की नै...। राधाकान्त बाबा घर-परिवारसँ भगैक विचार कऽ लेलनि। ओना समाज तँ समाज छी जे खाइकाल बौसैए, पड़ाइ काल बौसैए, रूसलमे बौसैए, नै जानि आरो कोन-कोन काल बौसैए। मुदा से राधाकान्त बाबाकेँ कियो नै बौसए एलनि। ओना मनमे रहनि जे कियो औता तँ अपन मनक बेथा कहबनि। केना नै कहियनि उपदेश झाड़लासँ झड़ै छै आकि उपैत केलासँ। मुदा मनक बात मनेमे अँतरी जकाँ घुरियाइत बहत्तरि हाथक भऽ गेलनि। केकरो नै देखि फेर मनमे उठलनि जे जखनि समाजे नै तखनि परिवारक केते आशा। बड़ करत तँ मुँहमे आगि धरौत, कठियारी के जाएत। तहूमे तेहेन चालि-ढालि सभ धेने जाइए जे एको दिन रहब की जहलसँ कम अछि। मुदा तैयो आशामे रहथि जे परिवारोक कियो जँ बौसए चलि औत तँ बौसा जाएब। अनेरे ऐ बुढ़ाड़ीमे केतए बौआएब। मुदा आशा अशे रहि गेलनि। ओना अंत-अंत धरि आशा रहनि जे आन-आबए वा नै, मुदा...?

दादी तँ दादीए भऽ गेली। सृजनकर्ता कुम्हार वर्तन गढ़ि ओकर मुँह-कान नै सोझ करए, तँ केहेन वर्तन बनत। तहिना दादी अपना बोनमे हराएल। किए बौसए औतनि। तहूमे कोनो कि हराएल बात अछि जे मरैबला मरबे करैए आ चूड़ी फोड़ि, सिनूर मेटा जीबे करैए। मुदा जीबैक जगह तँ चाही।

दरबज्जासँ उठि राधाकान्त बाबा कमलक मोटरीमे लटकैत कमंडल कान्हपर लैत ओसारसँ निच्चाँ उतरला की पोता देखलकनि। दौगल आबि पाछूसँ मोटरी पकड़ैत कहलकनि-

“केतए चललह?”

बोहैत पवित्र धारक स्नान जकाँ राधाकान्त बाबा हरा गेला। मनक बेथा मनेमे गुमसरि प्रेमक पेंपी बनि मुहसँ निकलए लगलनि। मुदा किछु उत्तर नै पाबि पोता कहलकनि-

“हमहूँ जेबह।”
संगी पाबि बाबा उत्तर देलखिन-
“रमैत जोगी बहैत पानि।”

❍

गंजन

जखने सुनीता दादी बेटीक हाल-समाचार सुनलनि जे तेहेन रौदीमे पड़ि गेल जे एको कनमा धान नै हेतै, तखनेसँ बाबापर आँखि गड़ौने रहथि जे जखने अवसर भेटत, नीक जकाँ गंजन करबनि। ओना बाबाकेँ बेटी कि इलाकेक समाचार बूझल रहनि मुदा सुनीता-दादीक कानमे ऐ लेल नै देलखिन जे कएले की हेतनि, तखनि तँ मनरोग चढ़ा देबनि। तइसँ नीक जे कहबे ने करबनि, अनका मुहेँ जे सुनबे करती तँ औहुना घोंघाउज कऽ लेब।

गर चढ़िते सुनीता-दादी बाबाकेँ कहलखिन-

''कहाँ दन मृत्युन्जय-बेटीकेँ एको कनमा धान नै हेतै, सात तूर दिन केना खेपतै? सभटा आगि लगौल अहाँक छी। जेहेन गाम तीनू बेटीक केलौं तेहेन गाम अहाँकेँ मृत्युन्जयले नै भेटल।''

दादीक गंजन गजिते बाबाक मनमे उठलनि जे जिनगीमे जँ किछु अराधि-संकल्पित बनि नै चललौं तँ खाली डिब्बामे झूटका दऽ झुनझुना बनौने की हएत। ''दस कोस सीमा जे बन्हलिऐ'' लोरिक की फूसिए कहने छथिन। जैठाम राँइ-बाँइ भेल गामक खेत जकाँ अनेको छोटका-बड़का आड़िमे जिनगी बन्हि गेल अछि, तैठाम कइए की सकै छी। अखनो ओ विचार मनमे मरल कहाँ अछि जे एक बाप-माएक धिया-पुता एक रंग जिनगी नै जीबए!

❍

सजए

बजैत लाज होइए मुदा नहियोँ बाजब तँ पुरुख कथीक। जहिना सभकेँ होइ छै तहिना जूति-भाँति लए पत्नीसँ मुहाँठुट्ठी भऽ गेल। दुनू दू दिशाक बुझनूक! खिसिआ कऽ अपने काज करए खेत चलि गेलौं। जलखै नै पहुँचल। सबूर केलौं। मुदा खीस आरो तबधि गेल। अबेर धरि खेतेमे खटैत रहलौं।

गामपर आबि नहा-सोना खाइले गेलौं। ओढ़ना ओढ़ि पत्नी घरमे सूतल। तामसे नै टोकलियनि। मुदा तैयो अनठा कऽ बच्चाकेँ पुछलिऐ-

''बुच्ची, माए केतए छथुन?''

कहलक-

''मन खराप छै सूतल अछि।''

पुछललिऐ-

''तोरा बुते खाएक परसल हेतह?''

कहलक-

''भानसो कहाँ भेल हेन।''

❍

घटक बाबा

एहेन अगियाएल क्रोध घटक बाबाकेँ जिनगीमे पहिल दिन छेलनि, जेहेन आइ भोरे उठलनि। एक तँ औहुना देह घटने थोड़-थाड़ क्रोध सदिखन रहबे करै छन्हि मुदा घटबी जिनगीमे घटती काज भेने जहिना होइ छै तहिना भेलनि। ओना देहक घटबी अनका जकाँ नै रहनि, किएक तँ सभ दिन रहने केकरो फेहम बनल रहै छै, सभ किछु दुरुस्त रहै छै, मुदा तइसँ भिन्न घटक बाबाकेँ भेलनि। जेना केरा गाछक वा अनरनेबा गाछक पानि सुखने खलपैट जाइए तहिना भेने घरक पहुलका सभ कपड़ो-लत्ता आ जुतो-चप्पल भऽ गेलनि। दहेजुआ देल कुरतो-गंजी आ जुत्तो-पप्पल ढील-ढीलाह बनि गेलनि। एकर माने ई नै जे कुरतो-गंजी आ जुतो-चप्पल बढ़ि कऽ ताड़ भऽ गेलनि तँए ढील-ढीलाह भऽ गेलनि। अपने सुखि कऽ पलास भऽ गेल छथि। ओना घरमे तेते-रास कपड़ो आ जुत्तो-चप्पल छन्हि जे अपन जीता-जिनगीकेँ के कहए जे मुइलोपर दान-पुन करैत उगड़िए जेतनि। मुदा कुछप भेने ओहो सभ कुछपिये जेतनि जइसँ कोनो सोगात नै लगतनि। जँ अपनो पहिरता तँ लेबरे जकाँ लगता आ दानो-पुन करता तैयो सएह हेतनि। खैर जे होउ, मुदा औझुका अगियाएल क्रोध बिनु हवोक ने पजरि जाए तेहने लहलही छन्हि।

कनभेंटक सातम श्रेणीक पोती सरस्वती जिज्ञासु बनि पुछलकनि-

“बाबा, पढ़ल-लिखल लड़काक संग बिनु पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआह केते करौलिऐ आ बिनु पढ़ल-लिखल लड़काकेँ पढ़ल-लिखल लड़कीक संग केते करौने हेबइ?”

पोतीक पुछल प्रश्नक उत्तर बाबा नकारि केना सकै छथि। कविताक तुकवन्दी जकाँ कुछप किए ने होउ, मुदा लय तँ भरबे करता। छ-अनियाँ मुस्की दैत घटक बाबा कहलखिन-

“कोनो की डायरी लिखि कऽ रखने छी, अनगिनती बूझह।”

बाल मन सरस्वतीक अनगिनतीमे ओझरा गेल। मुदा जहिना भूखक तृष्णाकेँ पानिओसँ किछु समए विलमौल जा सकैए, मुदा तृष्णो तँ तृष्णा छिऐ। ठोस जहिना पानिमे नै भँसियाइत, पानि हवामे नै उड़ैत तहिना सरस्वतीक तृष्णा नै उड़ल। पुन: दोहरा कऽ बाजल-

''बाबा, बिआह किए होइ छै?''

पाँच किलो मोटरीकेँ तँ टारि देलिऐ, मनहीकेँ केना टारबै। जहिना पएर पड़िते साँप फन-फना उठैए तहिना घटक बाबाकेँ फनफनी उठलनि। एक तँ औहुना घटबी देह थरथराइते रहै छन्हि तैपर आरो धऽ लेलकनि। मुदा जहिना गनगुआरि देखि नागक फनकी टूटि जाइत तहिना दस बर्खक पोतीकेँ सोझहामे ठाढ़ भेने घटक बाबाकेँ भेलनि।

❍

आने जकाँ

हलसल-फूलसल पत्नी बजली-

“आइ धरि अहाँ कहियो मोनसँ नै चाहलौं। सभ दिन बिगड़ले रहै छी?”

पत्नीक बात सुनि छूब्ध भऽ गेलौं जे एहेन बात किए कहलनि!

निच्चाँ-ऊपर देखि पुछललियनि-

“अहाँ केते चाहै छी?”

कहलनि-

“जहिना सभकेँ देखै छिऐ।”

कहलियनि-

“आने जकाँ हमहूँ भऽ जाइ तखनि ने?”

❍

दान-दछिना

तरगरे उठि पंडित काका नित्य कर्मसँ निवृत्ति भऽ झुनझुनाबला बत्तीक ठेंगा नेने सड़कपर आबि चिकड़ि-चिकड़ि बाजए लगला-

“ई समाज रहैबला नै अछि। आन बिसरि जाए तँ बिसरि जाए मुदा मरै बेरमे केना मुँह बन्न करब जे पुराण-पोथीक दान सभसँ नीक नै होइ छैक।”

आँगनसँ पत्नी सुनिते औगताएल दौगल आबि पुछलकनि-

“भोरे-भोर की भऽ गेल जे एना अर्ड़ाहै छी?”

पत्नीक पश्नसँ पंडित काकाकेँ दुख नै भेलनि। खुशीए भेलनि। कम-सँ-कम पत्नीओ तँ लगमे आबि पुछलनि। खखास करैत बजला-

“कहू जे भोज-काजमे लोक लाखक-लाख रूपैआ फूकि दइए। धोती-लोटा बाँटि दइए। अहीं कहू जे लोक आब जग-गिलास भऽ गेल, फुलपेंटे-कोट भऽ गेल किने? तैठाम धोती-लोटाकेँ के छूअत। जे छुऐबला अछि ओइले एकोटा पाइ नै लुटबए चाहैए, तखनि अनेरे रहि कऽ की करब। मन हुअए तँ अखने विदा भऽ जाउ।”

पंडित काकाकेँ संगीक जरूरति देखि पंडिताइन काकी बौसैत कहलखिन-

“अखनि धरि अहूँ ने तँ कहियो बाजल छेलौं। समाज दोखी बनौत। तामस घोंटि लिअ।”

❍

उड़हड़ि

एक तँ ओहिना जुड़शीतलक भोर, चारिए बजेसँ चन्द्रकूप बनि इनार अकास-पताल एक केने, सिरसिराइत वसन्त सिर सजबै पाछू बेहाल, जे जेतइ से तेतइसँ पीह-पाह करैत। तैपर तीन दिनसँ एकटा नवका गप गाममे सेहो उपकि गेल अछि। ओ ई जे कपरचनमा उड़हड़ि गेल! रंग-बिरंगक खेरहा-खेरही गाममे छिटाइत।

ओना उपरका जहाज जकाँ स्त्रीगणक बीच गप हवाइ भेल मुदा पुरुखक बीच कोनो सुनि-गुनि नै। तँए कपरचनमाक पिता-रघुनाथ लेल धैनसन। माए कुड़बुड़ाइत मुदा सासुक डरे मुँह नै खोलैत। ओना परगामी भेने माएओ आ पत्नीओक मन ओते घबाह नै होइत। होइत तँ ओतए जेतए सीमानक आड़ि धारक बाढ़िमे भँसिआ जाइ छै। कुसमा दादीक माने कपरचनमाक दादीक मनमे मिसिओ भरि हलचल नै। कोनो कि बेटी जाति छी जे अबलट लागत। बेटा धन छी जेतए रहत ओतए खुट्टा गाड़ि कऽ रहत। कियो बजैए तँ अपन मुँह दुइर करैए।

जुड़शीतल पावनि, अपने हाथे कुसमा दादी इनारसँ पानि भरि असीरवाद बँटबे करती। तहूमे तेहेन गप परिवारक उड़ल छन्हि जे बाँटबो जरूरीए छन्हि। ओना अन्हरगरे मनमे उठल रहनि मुदा पहरक ठेकान नै रहलनि। जखनि गाममे पीह-पाह शुरू भेल तखनिए फुड़फुड़ा कऽ उठि लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ली। मनमे ईहो रहनि जे इनार परहक असीरवाद अँगनाक अपेक्षा बेसी नीक होइ छै। तँए सभसँ पहिने इनारपर पहुँचब जरूरी बुझलनि। आब कि कुशक जौर आ घट थोड़े रहल मुदा तैयो।

इनारसँ डोल ऊपरो ने भेल छेलनि आकि नवनगरवाली समजिया-पुतोहु अबिते देखलनि जे दादी असगरे छथि तँए अवसरक लाभ उठा ली नै तँ पचताइये कऽ की हएत। उपरागी जकाँ पुछलखिन-

''उढ़ड़ा एलनि की नै?''

नवनगरवालीक बोल कुसमा दादीकँ मिसिओ भरि नै कबकबौलकनि।

मनमे नचैत रहनि जे एके पीढ़ी ऊपरक लोकक ने संकोच करैए, हम तँ दू पीढ़ी छिऐ। बाल-बोधक उकठपनो गपक जवाब उकठपने जकाँ दिऐ से केहेन हएत। नवनगरवालीक आँखिमे आँखि चढ़बैत कहलखिन-

''कनियाँ, अहाँ कहुना भेलौं तँ पोते-पोती भेलौं। किछु छी कपरचना तँ बेटा धन छी। जँ केकरो लैयो कऽ चलि गेल हेतै तँ सोचि नेने हेतै जे ठाठसँ जिनगी केना बिताएब। जेतए रहत जगरनथिया खन्ती गाड़ि देतै।''

भादवक बर्खा जकाँ कुसुमा दादीक मुँह बरसिते रहनि आकि इनारक किनछड़िमे कनबाहि भेल दुलारपुरवाली ठाढ़ छथि। मुदा ओ दादीक सभ बात सुनि नेने रहथि। मन भिन-भिना गेल रहनि। तैपर जुड़शीतलक उखमजक जे टटका-बसिआक भिरंत छिहे। टटका नीक आकि बसिआ। बसिआ नीक आकि तेबसिआ। तेबसिआ नीक आकि अमवसिआ। मुदा टटका। नवनगरवालीक पक्ष लैत कहलकनि-

''सभटा कएल हिनके छियनि। दुनियाँमे नाओंक अकाल पड़ि गेल छेलै जे कपरचनमा नाओं रखलखिन?''

सतैहिया बर्खाकेँ की छुटैक आशामे थोड़े छोड़ल जा सकैए। बीचोमे जोगारक जरूरति अछिए। जँ से नै तँ बिल-बाल होइत किम्हर-किम्हर बोहि जाएत से थोड़े बूझि पेबै। कुसमा दादी दुलारपुरवालीकेँ कहए लगलखिन-

''तों सभ फुलक नाओंकेँ बेसी पसिन करै छहक, मुदा तोंही कहऽ जे जेते अपना गाममे फूल अछि ओकर मूल्य कि हेबाक चाही। मुदा देखै कि छहक। पोताक नाओं कोनो अधला रखने छी जेहेन चालि-ढालि देखलिऐ तेहेन नाउओं रखि देलिऐ।''

दादीक उतारा सुनि नवनगरवाली मुँह चमकबैत बाजलि-

''दादी, अबेर भेल जाइ छै। एक चुरूक असीरवाद देती तँ दोथु नै तँ अपन राखथु।''

अगुआएल काजकेँ पछुआइत देखि दादी डोल नेनहि नवनगरवालीकेँ कहलखिन-

''मन तँ होइए जे सौंसे डोल उझलि दिअ मुदा अखनी काजक बेर अछि। जा तोहूँ घर-अँगना देखहक।''

❍

मत्हानि

भौँटक तीन मास पछाति श्याम आ कमलनाथकेँ भेँट भेल। ओना एक गामक रहितो एनाहे-ओनाहे सम्बन्ध दुनूक बीच भौँटसँ पहिने छल, मुदा महिना दिनक दौड़ एते लग आनि देलकै जे एक्के गाछक फल जकाँ बूझि पड़ए लगल।

एक तँ तीन मासक बकिऔता गपो-सप आ अपन पार्टीक हारि आ दोसराक सरकारोक हालि-चालि पार्टी लोकक मुहेँ सुनब तँ जरूरीए अछि। माटिक बान्हपर चैत-बैशाखमे धूरा-गर्दा उड़िते अछि, तहूमे तेहेन घोड़दौड़क समए अछि जे आरो उड़ि अकासकेँ अन्हरौने अछि।

भौँटक हारिसँ कमलनाथक मन झूकल तैसंग परिवारक तीन पुश्तक सेवा सेहो हराइत-बिड़हाति देखि आरो झूकि गेल। खसल मने कमलनाथ बाजल-

''भाय, की हाल-चाल अछि?''

कमलनाथकेँ श्याम आँकि लेलक। हारल लोकक बीच चढ़ा-उतरी होइते छै। खसैत कमलनाथकेँ देखि चढ़ैत श्याम बाजल-

''पूरबते।''

श्यामक उत्तर पाबि कमलनाथ भक-चकमे पड़ि गेल। पछिला बात बुझने बिना आगू केना बढ़ल जाएत। मने-मन सोचए लगल जे पूरबतक की अर्थ भेल। मुदा श्यामक पूरबतक अर्थ रहए अपन राजनीति। देशक जे हेतै से देशक लोक जनतै; तइसँ हमरा की। अपन ठीकेदारी, ऑफिसमे हेरा-फेरीक संग समाजमे सराध-बिआह चलैत रहतै, सभ अबाद रहत। ई की सेवा नै भेल?

श्यामक उत्तर नै बूझि कमलनाथ पुन: दोहरबैत पुछलकै-

''भाय, नै बूझि पेलौँ?''

अपन गोटी लाल होइत देखि श्याम अगुआएल नेता जकाँ विचारए लगल जे अगुआएब तँ ओहए ने भेल जे अपन विचारकेँ रूचिगर बना

दोसरकेँ बुझाएब। मुदा लगले मन चकभौर लेलकै। मुहाँ-मुहीं बाजब आ मुँह घुमा कऽ बाजब एक्के भेल। वएह ने कला छी। अनुकूल होइत श्याम बाजल-

"भाय, भोँटक पछाति जेना हमरो मन उड़िया-बिड़िया गेल। पहिने जेना करै छेलौं से आब कहाँ कएल होइए। तखनि तँ ढीलो-उड़ीसक दवाइ खा-लेब, से केहेन हएत?"

❍

मेकचो

पछुआ पकड़ैत मिथिलांचलक किसानकेँ अपनो दोख ओतबे छन्हि जेते सरकारक। किएक तँ ओहो अपनाकेँ जनतंत्रक किसान नै बूझि पेलनि।

पाँच बीघा जोतक किसान चुल्हाइ। आठम दसकमे गहुमक खेतीक संग सरकारी खादक अनुदान आएल। बीघा भरि गहुमक खेती चुल्हाइ करत। एक बोरा यूरिया आ एक बोरा ग्रोमर खादक पूजी लगबैक विचार केलक। ओना समुचित खादो आ पौष्टिक तत्वो खेतमे देब जुड़ब परहक फुड़ब भेल।

ब्लौकक माध्यमसँ खाद भेटै छै। पाँच दिन बरदा चुल्हाइ भी.एल.डब्ल्यू.सँ फर्म भरौलक। तीन दिन पछाति कर्मचारीओ लिखि देलखिन। दू दिन पछाति बी.ओ. साहैबक लिखला पछाति फर्म ब्लौक ऑफिस पहुँचत जे आठम दिन भेटतै।

फार्म जमा केला पछाति घरपर आबि चुल्हाइ चपचपाइत पत्नी रूसनी लग बाजल-

“ऐ बेर अपन गहुमक खेती नीक हएत!”

पतिक चपचपीमे चपचपा रूसनी चपि-चपि, गैंचियाइत नजरि दैत बजली-

“फगुआमे नवके पुड़ी खाएब।”

तीस दिसम्बरकेँ चुल्हाइ गहुम बागु केलक। पच्चीस किलो कट्ठा उपज भेल।

टुटैत उपजासँ टुटल चुल्हाइक मन पत्नीकेँ कहलक-

“ऐ बेरसँ नीक पौरुके भेल। चालीस किलो कट्ठा भेल रहए।”

रूसनी पुछलकनि-

“एना किए भेल?”

चुल्हाइ बाजल-

‘‘तेहेन चमरछोंछमे पड़ि गेलौं जे मेकचो-पर-मेकचो लगैत गेल। जइसँ बागु करैमे डेढ़ मास पछुआ गेलौं। तँए उपजा टूटि गेल।’’

पतिक घाउपर मलहम लगबैत रूसनी बाजलि-

‘‘खेती जुआ छिऐ। हारि-जीत चलिते रहै छै। तइले की हाथ-पएर मारि बैस जाएब।’’

बिसवास भरल पत्नीक बात सुनि संकल्पित होइत चुल्हाइ बाजल-

‘‘फेर एहेन फेरिमे नै पड़ब।’’

❍

झूटका विदाइ

जहिना हारल नटुआकेँ झूटका विदाइ होइ छै तहिना ने हमरो सहए भेल; मनमे अबिते प्रोफेसर रतनक चिन्तन धार ठमकि गेलनि।

पिताक श्राद्ध-कर्म समपन भेलाक तेसरा दिन प्रोफेसर रतन दरबज्जाक कुर्सीपर ओंगठि कऽ बैस; बितल काजक समीक्षा करै छला। जहिना नख-सिखक वर्णन होइत तहिना ने सिख-नखक सेहो होइए। मुदा काजक समीक्षा तँ मशीन सदृश होइत। जे पार्ट पाछू लगौल जाइत खोलैकाल पहिने खुलैए।

प्रोफेसर रतन छगुन्तामे पड़ल छथि जे समए केतए-सँ-केतए ससरि गेल आ...। आब कि थारी-लोटा आ कपड़ा-लत्ताक घटबी ओइ तरहेँ अछि जेना पहिने छल। कहू जे ई केहेन भेल जे एते रूपैआ लोटा पाछू गमा देलौं। जँ समाजक बात नै मानितौं तँ दोखी होइतो, मानलौं तँ की मानलौं। लोटाक चर्च हुनका सभकेँ नै करक चाहियनि? तहूमे तेना लाबा-फरही करए लगला जे इस्टिलिया केना देबै, लोहा छी अशुद्ध होइए। निअमत: फूल, पितरि वा ताम हेबाक चाही!! चानी-सोना तँ राजा-रजबारक भेल। विचार अनिवार्य भऽ गेल। फेर एहेन प्रश्न किए उठल जे घरही नै दऽ बच्चासँ बूढ़ धरि जे पंच औता सभकेँ होन्हि। सिआनोक पनिपीबा ओहए हएत जे धिया-पुताक। तखनि तँ लोटासँ लोटकी धरिक ओरियान करू। तहूमे तेहेन अनरनेवा गाछ जकाँ भरिगर गाछ ठाढ़ कऽ देलनि जे हाइ स्कूलक शिक्षक गंगाधर लोटाक संग धोतीओ बँटलनि। तैठाम एको अलंग नै करितथि; से केहेन होइतनि।

बजारसँ घुमला पछाति जहिना नीक वस्तु देखलापर मनमे उमकी उठैत तँ अधला देखलापर डुबकी लिअए पड़ैत, सएह ने भेल। प्रोफेसर रतनक मन कोसी-कमलाक एकबट्ट भेल पानि जकाँ घोर-मट्ठा भऽ गेलनि। चिलहोरि जकाँ झपटैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“मन बिसाइन-बिसाइन भेल जाइए आ अहाँकेँ एक कप चाहो ने जुरैए?”

पतिक आदेश सुनि सुजीता चाहक ओरियान केलनि।

चाह दैत सुजीता, पजरामे बैस जट-जटीन जकाँ पुछलखिन-

“की भेल जे एना मन विधुआएल अछि?”

ओना चाहक चुस्कीसँ रतनक बिसबिसी कनी कमलनि मुदा निड़कटोबलि भऽ कऽ छूटल नै छेलनि। ओही झोंकमे झोंकि देलखिन-

“हएत कथी झूटका विदाइ भेल।”

पतिक बात सुजीता नै बूझि सकली। बुझियो केना सकितथि। मुदा रोड़ाएल दालिक सुगंध जकाँ अनुमानए लगली। मनमे जे कुवाथ भेल छन्हि से जाबे खोलता नै ताबे केना बूझब। जँ कोनो तेहेन बात रहितनि तँ एना साँप जकाँ गैंचिया-गैंचिया किए चलितथि। बजली-

“कनी काल अराम करू, हमरो हाथ काजेमे बाझल छेलए, ओकरा सम्हारि लइ छी।”

❍

मुँहक खतियान

ऐ बेर दुर्गापूजाक नव उत्साह अछि। उत्साहो उचिते, हाले-सालमे मलेमासक विदाइ भेल अछि। एक दिन माघ बितने तँ आशा फुड़फुड़ाइत पाँखि झाड़ए लगैए, भलहिं पच्चीस दिनक टप-टप पाला खसैत शीत-लहरी आगू किए ने हुअए। मुदा से नै, कहियो नावपर गाड़ी चढ़ैए तँ कहियो गाड़ीपर नाव। तहूमे दुनूक बीच, गाड़ी-नावक बीच एहेन रंग-रूपक मिलानी रहै छै जे दुनू-दुनूकेँ पीठेपर उठबैए आ पेटेमे रखैए। से ऐ बेर थोड़े हएत, तेते ने लोक रौदियाएल अछि जे महारेपरसँ कूदि-कूदि उमकत।

औझुका दिन भगवतीक माटि लेल जाएत। भोजक पाते देखि धिया-पुता चपचपाए लगैत जे खूब खेबनि। आखिर भोज होइते किए छै। चारि बजे भोरेसँ पीह-पाह शुरू भऽ गेल। ओना रघुनी भायकेँ बूझल रहनि मुदा तैयो पीह-पाह नीक नै लगैत रहनि। कारण रहए जे दिनक फल भोजन बूझि क्रमिक-काजक क्रिया बुझै छथि। जाबे चौकक हवा पानि पीबए पहुँचैत आकि तइसँ पहिने चाहक चुल्हि पजरल देखलनि।

अपन मनकामना पुरबैत तेतरा दस कप चाहक भोज केलक। भोजन सत्तरिमे भोजैत अपन बात बजिते अछि तहिना तेतरा बाजल-

"भाय, ट्रेण्ड डरेबर भऽ गेलियौ, भगवती दयासँ आब कोनो दुख-तकलीफ परिवारकेँ नै हेतै।"

दोकानक दोसर बेंचपर बैसल पोखरिया असामी रामेसर सेहो बैसल। तेतराक बात जेना रामेसरक छातीमे छेदि केलक तहिना रामेसरकेँ भेल। झोंक चढ़िते बाजल-

"बाप जे मरूआ लेलकै, से तँ अखनि तक सठाएले ने भेलै हेन...?"

रामेसरक बात सुनिते तेतरा लोढ़ियौलक। मुदा कएल कि जाए? दुनूकेँ थोम-थाम लगबैत रघुनी भाय कहलखिन-

''दू घंटा लोकक‍ँ बातो बुझैमे लगतनि तँए दू घंटा दुनू गोरे घरपर जाउ।''

घर दिस रामेसर बढ़ैत बाजल-

''बाढ़िमे घर खसि पड़ल, नै तँ अखने बोही आनि कऽ पंचक बीचमे फेक दैतिऐ।''

घरमुहाँ होइत तेतरा बाजल-

''की बूझि पड़ै छै जे बबेबला सनकी अछि, झाड़ि देबै। जँ ओकर बाँकीए छै तँ मनुख जकाँ फुटमे कहैत।''

❍

कोसलिया

सीकसँ खसल मटकूड जकाँ सोमन काकाक मन छहोंछित भऽ फुटए लगलनि। बिनु भाँग पीनौं अफीमक निशाँ चढ़ि गेलनि। नितागति भेल देहकँ खरौआ जौड़ीसँ घोरल खाटपर चितंग पटकलनि। दंगल जकाँ नै जे किछु हारबो करैए, किछु जीतबो करैए आ किछु खिचड़ीओ बनैए। दोसर कारण छेलनि। औनाइत मन उधिया-उधिया बजैत जे चारू बेटाक पिता छी, पालन-पोषन करै छी तखनि किए ने बूझि पेलौं जे घरमे कोसलिया सेहो बसि रहल अछि। मनक सीमा टपि बोल निकललनि-

“अनेरे परिवार-परिवार करै छी, सत्तरि बर्खक पसीनाक की मोल रहल। यएह ने जे घरे-परिवारेमे एहेन मोइन फोड़ि दुदिसिआ धार बहए लगल। कुट्टी-कट्टा जकाँ जँ दुनू दिस धार बनाएब तँ नारक मुट्ठी घुसकबै काल हाथ खर्ड़ेबाक डर रहबे करत।”

सोमन काकाकँ देखि घुरनी काकीक मन मिसिओ भरि नै हलचलेलनि। जिनगीक अनेको क्रोध देखने छथि। अनुभवी छथि। कनी फड़िक्केसँ थर्मामीटर लगा काकी काकाक रोग नापए लगली। मुदा पुरना थर्मामीटरसँ तँ पुरना रोग परेखिमे अबैत नवका केना औत। सहए भेलनि। ओना सोमन काका अपने ठकमुड़ा गेल रहथि जे एना किए भेल? मुदा तैयो घुरनी काकी बीख उतारैक मंत्र चलौलनि-

“बेसी भीड़ भऽ गेल। मन थीर कऽ कऽ नहा-खा लिअ। खा कऽ जखनि अराम करब तखनि अपने मन चेन भऽ जाएत।”

काकीक खट-मधुर गप सोमन काकाकँ आरो अमता देलकनि। झटकीक झटका जकाँ झटहा झटकि देलखिन-

“जअ-तिल आनि उसरैग दिअ। हमहूँ अहाँकँ उसरैग दइ छी। कोन भाँजमे अनेरे पड़ल छी। जैठाम द्रौपदीसँ लऽ कऽ रघूबाबू धरि कुरसी जमौने छथि। तैठाम पार पाएब असान छै।”

○

हूसि गेल

भोज खा बाबा अबिते रहथि आकि पोता-रमचेलबा मन पड़लनि। तखने देखलनि जे तीमन-तरकारीक मोटरी माथपर नेने दछिनसँ अबैए। मन सहमि गेलनि जे सभ दिन पोताकेँ संग नेने जाइ छेलौं, आ...। लगले मनमे एलनि जे जे पूत हरवाहि करए गेल, देव-पितर सभसँ गेल। तैबीच हाथमे लोटा देखि रमचेलबा पूछि देलकनि-
''केतए गेल छेलह बाबा हौ?''

बाबा अवाक भऽ गेला। मुदा, आब तँ ओहए सभ ने करत तँए अनुकूल बना राखब जरूरी अछि। निधोख कहलखिन-

''बौआ, तूँ हाटपर गेलह, इम्हर बिझो भऽ गेलै, तँए कि करितौं?''

जहिना निधोख बाबा बजला तहिना रमचेलबा पुछलखिन-

''बनलह किने?''

बाबाकेँ मन पड़ि गेलनि। पूर्वांचलक मणिपुरी भोज; जइमे जे वस्तु जेते नीक रहै छै ओ ओते पहिने परोसि खुआ दइ छथि। मुदा अपना ऐठाम तँ अन्नकेँ अन्न बुझनिहार आगूमे आएल पहिल अन्नक पूजा करत। बाबा कहलखिन-

''बौआ, नीक भेलौ जे तों नै गेलेँ।''

अपन बात सुनि रमचेलबा बाजल-

''से की हौ?''

अनुकूल होइत रमचेलबाकेँ देखि बाबा कहलखिन-

''धुर! हूसा गेल।''

अकचकाइत रमचेलबा पुछि देलकनि-

''से की हौ?''

''की कहबौ, भात-दालि बड़ पवित्र बनल छेलै, तैपर अल्लू-परोरक तरकारी तेहेन बनल छेलै जे देखिए कऽ मन हलसि गेल। खूब खेलौं।

तेकर पछाति जे नीक-नीक विन्यास सभ आबए लगल, ओकरा दिस के ताकैत।"

"तब तँ खूब बनलह?"

"अपूछ भऽ गेल।"

❍

पोखला कटहर

पान सए रूपैआ खरच भेला पछाति झबरी काकीकेँ अदहा छूटपर एक हजार रूपैआ बैंकसँ लोन भेटलनि। अखनि धरिक जिनगी बोइन-बुत्ताक रहलनि तँए ओहन रोजगार चाहैत रहथि जे कए सकथि। ओना घरे लग रोजगरनी सभ छन्हि मुदा जातिक विभाजन काजोकेँ कम सक्कत विभाजित नै केने अछि। तँए लगमे रहितो झबड़ी काकी अनाड़ीक-अनाड़ीए। मुदा पुछबो केकरा करथिन। एक हजार रूपैआक बात अछि। के केना झपटि लेतनि तेकर ठीक नै।

काकीक घरक आगू रस्तापर देने श्याम जाइत रहथिन हुनका देखिते काकी टोकि देलखिन-

''बौआ सियाम, तोहीं सभ ने बेटा-भातीज भेलह। रोजगार करैले एक हजार रूपैआ लोन देलक हेन।''

झबड़ी काकीक बात सुनि श्याम नजरि खिरौलनि। बगलेमे देखि कहलखिन-

''पचहीवालीकेँ सोर पाड़ियौ।''

पचहीवालीकेँ अबिते श्याम पुछलखिन-

''भौजी, अहाँ अपना संगे तरकारी बेचैक लूरि सिखा दियौ। अपनो किछु पूजी भइए गेलनि। ऐबेर तेते आम फड़ल अछि जे कटहरकेँ के पूछत। ओना बेसी फड़ने पौखुलाहे कटहर बेसी अछि मुदा चौथाइ कमाइ लऽ कऽ बेचि लिअ।''

❍

सरही सौबजा

दिन भरि सात गोटेक संग झंझारपुरिया वेपारी आम तोड़ि, काँच-पाकल आ फुटल बेरा टौकड़ी बना, ट्रकक प्रतिक्षामे टहलैत गामक चाहक दोकानपर आबि अनेरे बजैत-

''एहेन ठकान जिनगीमे नै ठकाएल छेलौं, जेहेन आइ ठकेलौं?''

चाहे दोकानक छर्ड़ा बूझि आनो-आन छर्ड़ा छोड़लक-

''झंझरपुरिया तँ इलाकाकेँ ठकैए, ओकरा ठकि लेत हमर गौआँ?''

वेपारीओकेँ मनमे किछु रहै तँए पाछू हटैले तैयार नै। बत-कटौबलि एहेन चलि गेल जे ने एकोटा ऐ गामक नीक अछि आ ने झंझरपुरिया। बोलीक मारि तँ धुड़-झाड़ होइत, मुदा आगू बढ़ैक साहस कियो ने करए। एकटा गामक प्रतिष्ठा बूझि तँ दोसर घोड़न-कटान बूझि।

ओना चौकक रोहानी ठीक छेलै किएक तँ सूर्यास्तक समए रहए। जटा भाय चौकक रोहानी देखिते चाहे दोकानपर बैसला। सामाजिक प्रश्न तँए हस्तक्षेप कएल जा सकै छै। पुछलखिन-

''कथीक घोंघाउज छी?''

झंझारपुरबला वेपारी कहलखिन-

''अहीं गाममे लखनजी सँ पाँच हजारमे सौबजा आमक एकटा गाछ नेने छेलौं तइमे ठकि लेलनि।''

अपन चर्च सुनि लखनजी सेहो मोबाइलिक दोकानपर सँ चाहक दोकानक आगूमे आबि ठाढ़ भेला। वेपारीक प्रश्न उठिते लखनजी पुछलखिन-

''की ठकि लेलौं, बाजू।''

वेपारी कहलकनि-

''कलमी बूझि नेने छेलौं, सरही दऽ ठकि लेलौं?

लखनजी पुछलखिन-

''केतेमे नेने छेलौं केतेक आम भेल?''

“से तँ नफगर अछि, पाँच हजारमे नेने छेलौं। खर्च-बर्च काटि कहुना पाँच हजार बँचबे करत?”

जटा भाय पुछलखिन-

“तखनि जे एना बजै छी से उचित भेल?”

वेपारी कहलकनि-

“हमर बात दोसर अछि। सौबजा कलमी होइ छै। हिनकर अँठियाहा छियनि, माने सरही छियनि। ओना साइजोमे ठीक छन्हि।”

जटा भाय पुछलखिन-

“अहाँ केना बुझै छी जे मुँह-नाक एक रहितो सरही छी?”

वेपारी कहलकनि-

“जटा काका, अहूँ भासि जाइ छी। कहुना भेलौं तँ वेपारी भेलौं किने। कुमारि-बिऔहितीक भाँज जँ नै बुझबै तँ घटकैती कएल हएत?”

❍

तेरहो करम

अबेर कऽ भाँज लगने कनटीर काका खेत देखए नै गेला। ओना मनमे उठलनि मुदा भदवारि जानि नै गेला। विचारि लेलनि जे इजोरिया छीहे भोरगरे देखि लेब।

छगाएल मन साढ़े तीनिए बजे नीन टूटि गेलनि। नीन टुटिते नजरि दौग कऽ काज पकड़ि लेलकनि। तीन-हथ्थी ठेंगा लऽ बाध दिस विदा भेला।

श्रीविधि खेती लेल जे धानक बीआ भेटल छेलनि वएह धान। रौदीक किरतबे विधि तँ भंग भऽ गेलनि मुदा सए रूपैए घंटा पटा बीघा भरि खेती केलनि। संयोगो नीक बैसलनि। कोसी नहरिक पहिल पानि हाथ लगने सुतरलनि।

नअए दिनक पाकल धानमे भरि जाँघ पानि, चुट्टी-पीपड़ीसँ लदल सीस देखि कनटीर काकाक मन चोटसँ चोटाए लगलनि। असहाज होइते बमछैत घर दिस घूमि गेला। मोहनलालक घर लग अबिते आरो बमकि-बमकि बमछी छोड़ए लगला। आँखि मीड़िते मोहनलाल आँगनसँ निकलि लगमे आबि पुछलकनि-

''काका, एना किए भोरे-भोर बमकै छिऐ?''

ओना कनटीर काका आ मोहनलालक उमेरक दूरी बीस बर्खसँ बेसी हटल मुदा विचारक दूरी लगीच बनौने तँए दुनूक बात दुनू सुनबो करै छथि, कहबो करै छथिन आ मानबो तँ करिते छथि।

बमकी सुनि कनटीर काका ठमकैत बजला-

''की कहियऽ बौआ, परसू धान काटि तोड़ बागु करैक विचार केने छेलौं। तोहूँ तँ खेती करिते छह, तोहीं कहऽ जे धानक-नारक की गति हएत, छनुआँमे केते भीड़ होइ छै से कि कोनो नै बुझै छहक। तैपर कहिया खेतक पानि सूखत आकि फेर दोहरा कऽ पानि औत तेकर कोन ठेकान छै?''

कनटीर काकाक दहलाइत छातीकेँ खढ़ फेक असथिर करैक विचार मनमे उठिते मोहनलाल कहलकनि-

''डुमैक कोन आशा करै छी उगैक आस करू।''

मोहनलालक तोष जेते संतोष देलकनि तइसँ बेसी असंतोष बनौलकनि। मनमे एलनि जे एक तँ ठेकानि कऽ नहरक पानि नै अबैए तैपर सँ छहरक बान्ह-छेक निअमित नै अछि। सरकार कहत जे कानून अपना हाथमे नै लिअ। बजला-

''एको कर्म बाकी नै रहत। तेरहो कर्म भइए जाएत। सबहक नजरि दैछने खाइपर लटकल छै से केना उतरतै?''

मोहनलाल पुछलखिन-

''काका, कुदै-फानै तोड़ै तान, से राखए दुनियाँक मान' बिसरि गेलऐ?''

किछु मन पाड़ैत कनटीर काका कहलखिन-

''हौ छोड़िओ केना देब, अकाल मृत्यु केना हुअए देब।''

❍

डुमैत जिनगी

डुमैत कारोबार देखि झड़ीलाल डुमैत जिनगी, जहिना ओछाइनपर पड़ल चारक कोरो-बत्ती लोक देखैत तहिना देखि रहल छथि। तड़पैत मन बेथित भऽ दुनियाँ निहारिते बुदबुदेलनि-

''एतेटा दुनियाँमे अपन किछु ने रहल।''

मुदा लगले मन ठमकि गेलनि। जिनगी तँ परती खेत जकाँ नै अछि जे जेम्हरसँ तेम्हर जेबाक हुअए तिम्हरे-सँ-तिम्हर कोणा-कोणी रस्ता बना लिअ। जिनगीक तँ नाप अछि।

ओना पचास बर्खक झड़ीलाल अखनि धरि हारि मानैले तैयार नै छला मुदा एकाएक मृत्युक समीप देखि थर-थरा गेला। हारि नै मानैक कारण छेलनि जे जे गौरव गाममे केकरो नै देखै छला ओ अपनामे देखै छला। ओ छियनि समैया फसिल जकाँ भिन्न-भिन्न नाओं। अनेको नाओंसँ अपन प्रतिष्ठा बनौने छथि। कियो वेपारी भाय, तँ कियो डाक्टर भाय, कियो दिलीप भाय कहै छन्हि। मुदा स्त्रीगणक बीच झड़-झड़हा नाओं चलै छन्हि। यएह छेलनि झड़ीलालक जिनगीक मान-प्रतिष्ठा। मुदा जे होउ, झड़ीलाल अपनाकेँ मेहनती वेपारी जरूर बुझै छथि।

सालमे तीन-चारि जोड़ मुइल-टुटल बड़द (गाड़ीक टुटल, घास-पानिक टुटल, रोगाएल इत्यादि) सस्तामे आनि, दुनू परानी जमि कऽ सेवा करै छथि आ डेढ़िया-दोबरमे बेचि अपना जीविकाक आधार बनौने छथि। घुमै-फिड़ैबला छथिए तँए तीनू बेटीक बिआह एहेन नजरिए कऽ नेने रहथि, जे कहियो भार नै बुझलनि।

अंतिम खेप माने ऐ खेपमे ठका गेला। आठे दिन खुट्टापर बड़द अनला भेलनि कि पाँचे दिनक बीच जोड़ो भरि बड़द मरि गेलनि।

खुट्टापर पड़ल मरल बड़द लग बैसल दुनू परानी झड़ीलाल। अक-वक बन्न। तरसैत मन कलपैत देवसुनरिक, जहिना रौद, पानि वा शीतमे सिताएल चिड़ै पाँखि फड़फड़बैत; तहिना मन फुड़फुड़ेलनि-

''भगवान हाथक काज छीन लेलनि?''

पत्नीक बातक उत्तर झड़ीलालकेँ नै फुड़लनि। फुड़बो केना करितनि, जिनगीमे कहियो पहरनियाँ देवीक पूजा पहाड़पर चढ़ि नै केने छला। मुदा तैयो घिंघियाइत स्पष्ट उत्तर देलखिन-

''दुनियाँ बड़ीटा छै, एकटा काज छिनाएल दोसर-तेसर-चारिम ताकि लेब।''

पतिक उत्तरसँ देवसुनरिकेँ झँपन-तोपन बरसाती सुरूज जकाँ आशाक किरिण फुटलनि, मुदा लगले फेर तोपा गेलनि। बजली-

''काजले तँ लूरि चाही, से...?''

❍

चोर-सिपाही

चोरिक बाढ़ि एने गामे-गाम चोरक सोहरी लगि गेल। जहिना घोरन लुधैक जाइत तहिना चोरो लुधकए लगल। सेहो एकरंगा नै, सतरंगा! पाँखिसँ बिनु पाँखिबला घोरने जकाँ घुड़छा-घुड़छे! जेकर बहुमत तेकर राज-पाट! शासक-सँ-सिपाही धरि।

अगहन मास। गामक अदहासँ ऊपर उपजल धानक खेतमे १४४ लगि गेल। कोनो बटेदारीक चलैत तँ कोनो फटेदारीक। सरकारीओ काज तँ सरकारीए छी। एक घंटाक काज मासो दिनमे हएत तेकर कोनो गारंटी नै। तखनि १४४ मे जप्त भेल खेत ४४ दिनक बदला ४४ मासो रहि सकैए।

ओस पला गेल। दिन खिआ कऽ पानि भऽ गेल। दिन-राति शीतलहरिमे डूमि गेल। दर्जनो भरि सिपाही धानक ओगरबाहि करैत। अपना जिनगी दिस तकलक तँ बूझि पड़लै जे जान बँचब कठिन अछि।

पहिल सिपाही बाजल-

''खस्सी मासु खाइ जोकर समए अछि।''

दोसर बाजल पुछलक-

''जँ बनबैले तैयार होइ तँ खस्सी आनि देब?''

सएह भेल। दूटा सिपाही विदा भेल। हाथमे हथियारो आ देहमे बर्दीओ रहबे करै। दिनके देखल खस्सीओ आ घरो छेलैहे। अपने जकाँ एक गोटे मुँह दबलक दोसर उठा कऽ लऽ अनलक।

बना-शोना सभ भरि मन खेलक। मुदा दोसरे दिनसँ दुनू गोटेकेँ आन-आन सिपाही चोरबा कहए लगल।

सालो नै लागल, ग्लानिसँ गड़ि दुनू नोकरी छोड़ि अपन पुरना वृतिमे लगि गेल। एक समाज चोर-सिपाही तँ दोसर समाज सिपाही-चोर कहए लगलै।

❍

दूधबला

फगुआक समए। पीह-पाहसँ मौसमक रंग चढ़ि रहल छल। दिनुका काज उसारि नित्यानन्द काका दरबज्जापर बैस सालक फगुआक ऊपर-निच्चाँ विचारि रहल छथि। जाड़सँ गरमीक प्रवेश भऽ रहल अछि। ठाढ़ पानिकेँ इनहोराइले ठंढ मारि तँ सिरसिसाइए पड़तै। जँ से नै तँ इनहोराएत केना। मुदा तेहेन दोखाह दोरस हवा बोहि गेल जे सोझ बाट (नीक रस्ता) बालु-गरदासँ अन्हरा कऽ तेहेन बहबाड़ि बनि रहल अछि जे भरि मुँह बाजब कठिन बनल जा रहल अछि।

सूर्यास्त तँ भऽ गेल मुदा अन्हराएल नै छेलै। मोटर साइकिलसँ उतरि मनोहर नित्यानन्द काकाकेँ प्रणाम करैत आगूक चौकीपर बैसल।

किछु दिन पूर्व धरि नित्यानन्द काका मनोहरकेँ दूधबेच्चा बुझै छला। मुदा पनरह-बीस दिन पहिने शंका जगलनि से जगले रहि गेलनि। जइसँ विचार बदलए लगल छेलनि। मुदा कोनो विचारकेँ बदलैसँ पहिने ऊपर-निच्चाँ देख लेब जरूरी बूझि पुछलखिन-

"कारोबारक की हाल छह?"

नित्यानन्द काकाक उत्तर दइसँ पहिने मनोहरक मनमे आएल जे जखनि फगुआक सनेस अनने छियनि तखनि आगूमे रखैमे कोन लाज। अनेरे साँइक नाओं सभ जानए आ हए-हए करए। जुगोक तँ धर्म होइ छै। के भँगखौका शराब नै पीबैए। ओ सभ तँ निशोकेँ पानि उतारि देने अछि। भाय जखनि एकटा प्रेमी अछि तखनि तँ जिनगी भरि प्रेम करू नै तँ पुरुखक आँखिसँ गिरब ओते महत नै रखै छै जेते मौगीक आँखिसँ। मुदा अपनाकेँ सम्हारि विचारि लेब जरूरी बूझि बाजल-

"काका, आइक जुगमे दूध बेचने गुजर चलत, तखनि तँ...?"

नित्यानन्द काकाकेँ ठहकि गेलनि। मुदा तेयौ मन नै मानलकनि बजला-

"केते गोटे गाममे दूधबेच्चा छह?"

गर पाबि मनोहर कहलकनि-

‘‘काका, आब कि कोनो गाइए-महिसिक दूध बिकाइए। गाछसँ लऽ कऽ लोहा धरिक दूध बिकाइए। केतेक नाओं कहब। जेम्हरे देखै छी तेम्हरे सएह।’’

सएह केर सह पाबि नित्यानन्द काका हूँहकारी दैत बजला-

‘‘से सएह।’’

❍

टाइपिस्ट

पच्चीस बर्ख पूर्व मैट्रिक सेकेण्ड डिवीजनसँ पास केलौं। ने नोकरी भेल आ ने लोकक पीहकारी दुआरे खेती केलौं। शत-प्रतिशत अपनाकेँ भारत सरकारक बेरोजगारक बोहीमे नाओं लिखा लेलौं।

भरि दिन गप-लड़ौनाइसँ लऽ कऽ ताश जोतै धरिक रूटिंग बना लेलौं। किछु दिन पछाति बूझि पड़ल जे भरिसक हमरा सबहक फाइल लाल-फीताक तरमे पड़ि गेल। ओना पाँच बर्ख रेगुलर बेरोजगार रहलौं, मुदा एक दिन तामस उठल नवीकरण करौनाइ छोड़ि देलौं। तेकर पछाति कोन बेरोजगार भेलौं तेकर अर्थ नहियेँ तहिया लागल आ ने आइए बुझै छी। जेकर खरच लाख रूपैआ, उपजे सबा सेर!

दइबला भगवान छथि, लगौता कोनो फेर। सबूर तँ भेल मुदा मन नै मानलक। तखनि भेल जे किछु करक चाही। ओना मन तँ छह-पाँच केलक मुदा टाइप-राइटिंग मशीन किनैक विचार भेल। किनलौं। टाइपिस्ट बनि अपनाकेँ ठाढ़ देखलौं। ओना बजारक भाउए ठीके छी।

आब कहू जे एहनो होइ जे जेते कागत-पत्तर टाइप करब से गणेशजी जकाँ बूझबो अनिवार्य अछि। आकि टाइप करैक पाइ लइ छिऐ, टाइप कऽ देबै। जँ केतौ छुटो-छाट हेतै आकि शब्दो गलती हेतै, से दोख मशीनक हेतै आकि हमर हएत? कहू जे केहेन बूड़िपना सोहनक भेल जे पुछलनि-

''कागतमे कि सभ छेलै?''

सोहन इंजीनियरिंग पढ़ि बंगलोरमे काजरत छथि। बिआही पत्नी शिक्षिका छथिन। कनीए तरपट ई छन्हि जे एक गोटे बंगलोरमे छथि दोसर गाममे। ओना सोहनोक सोचब गलती नै भेलनि। कमेता बंगलोरमे रहता बंगलोरमे आ घरवाली रहथिन गामक घरमे से केहेन हएत। जिनगीक तँ स्तर होइ छै।

शिक्षिका पत्नी थूक फेक अनठबैत एली जे अपने कि कोनो नै कमाइ छी जे एहेन छुतहरक कमाएल खाएब। मुदा संगी-तुरिया पीठपोहू भेलनि। दुनू बेकतीक भेद न्यायालय पहुँच गेल। ओही कागतक कच्चा नकलक बात सोहन पुछने छला।

❍

समदाही

अनुप काकाकेँ दूटा पत्नी छन्हि। गृहस्ती जीविका रहने तीनू परानी अपन-काजमे दिन-राति मगन रहै छथि। दुपहरिये रातिसँ मालक तकतियान अनुप काका करए लगै छथि। सभ दिन संग रहितो जहिना दिन-राति बारहो मास घुसुकि-घुसुकि अपन काज करैत रहैए तहिना तीनू परानीक बीच सेहो होइते छन्हि। मुदा जहिना लोकक धियान दिन-रातिपर नै पड़ै छै तहिना अनुपो काकाक धियान नै पड़ै छन्हि। हमरा खेलासँ काज तँ हमरा पीलासँ काज, बस एतबे।

समए केकरा संग छोड़ै छै जे अनुप काकाकेँ छोड़तनि। जखने अधरतियामे उठता आकि मुँह-हाथ धोइते पहिने चाह पीता। जहिना केतौ चलैसँ पहिने माए अपन बच्चाकेँ खुअबैए तहिना अनुपो काकाकेँ दुनू सौतिन करिते छन्हि। ओना निअमित काज दुनू सौतिनमे बाँटल नहियेँ छन्हि, नजरिएसँ बाँटि-बाँटि काज करै छथि तँए ने कहियो उपराँउज होइ छन्हि आ ने बैसारी बूझि पड़ै छन्हि।

दू बजे रातिमे चाह पियाएब, तोहूमे जाड़क मासमे से अबूह तँ दुनू सौतिनकेँ लगबे करनि। केतबो पति सुख लोककेँ भेटौ मुदा जाड़ोक तँ अपन सुख छै। मुदा थर्मसमे चाह बना पति सेवा दुनू कऽ लइ छथि। काजो असान भऽ जाइ छन्हि। एतबे ने जे थर्मससँ गिलासमे ढारि दिअ पड़ै छन्हि। काजक बँटबारा नै रहने कहियो बिआही तँ कहियो समदाही पिअबैत रहै छन्हि। काज करैक ढंग दुनूकेँ अपन-अपन छन्हि। बिआही गिलास धो उनटा कऽ रखै छथि, जखनि कि धोइ दुआरे समदाही गिलासेमे पानि रखि दइ छथिन।

चाहक सुआद पबिते अनुप काका बूझि जाइ छथि जे केकर किरदानी छी मुदा कहबो केकरा करथिन। कोनो आँगुर कटने अपने घाव। तहूमे सौतिनियाँ डाह, घरेसँ सड़ेरा उठत। तहूमे खेती-पथारी लेल नै, खाइ-

पीऐले! भरि दिन अनेरे मगजमारीमे ओझरा जाएब। तइसँ नीक चुपे रहब।

करसीक लहलहाइत घूर लग बैसिते बिआही चाह नेने एलखिन। चुस्की लइते अनुप काकाकँ बजा गेलनि-

"हँ, औझुका चाह चाह जकाँ लगैए किने!"

बजला तँ अनुप काका फुसफुसाइए कऽ मुदा समदाही सुनि गेलखिन। सुनिते फरिक्कैसँ जुमा कऽ फेकलनि-

"बड़ काग भाषा सुनिनिहारि भेल छथि।"

❍

बुढ़िया दादी

नै जानि दादीकेँ एहेन क्रोध किए भऽ गेलनि। एक तँ औहुना बैशाख-जेठक सुखाएल जारनि चरचराइत रहैए, खढ़क छाड़ल-छार पटपटाइत रहैए, तइ हिसाबे दादीओक खटखटाएब अनुकूले भेल। दादी माने तीन पीढ़ी ऊपर नै कि गामक बनौआ दादी। नवो-नौताड़ि बनौआ दादी होइते छथि, उचितो छैक।

आठ-दस बर्खक पोता अपन कुत्ताकेँ अनठियासँ लड़ा देलक जइसँ कोनचरक सजमनिक गाछ टूटि गेलनि, तेकरे तामस दादीकेँ पोतापर रहनि। जखनि टुटलनि तखनि बाधमे रहथि तँए नै देखलखिन। तखनि ततबे, कुत्तेक झगड़ा भरि।

बारह बजे बाधसँ अबिते, जहिना हजारो चेहराक बीच प्रेमीक नजरि प्रेमिकापर जा अँटकि जाइत, तहिना दादीक नजरि सजमनिक गाछपर पहुँच गेलनि। लटुआएल-पटुआएल पड़ल देखलखिन। नरसिंह तेज भेलनि, मुदा परिवारक सभ गबदी मारि देलक। तँए अधडरेड़ेपर तामस अँटकि गेलनि। जँ अकासक पानिकेँ धरती नै रोकए तँ पताल जाइमे देरी लगतै?

दोसरि साँझ जखनि बाधसँ घूमि कऽ दादी एली तँ नीक जकाँ भाँज लगि गेलनि जे पोताक किरदानीसँ गाछ नोकसान भेल। तामस लहड़ए लगलनि। छौड़ाकेँ सोर पाड़लखिन-

"अगतिया छैँ रौ, रौ अगतिया?"

नाओं बदलल बूझि गोविन्दोकेँ अवसर भेटलै। अन्हारे गरे चौकी-दोगमे नुका रहल। अपने फुड़ने दादी भट-भटाए लगली-

"भरि दिन छौड़ा एम्हर-सँ-ओम्हर ढहनाइत रहैए आ कुत्ता-विलाइ तकने घुड़ैए।"

मुदा लगले मन ठमकि गेलनि। भरिसक अँगनामे नै अछि, खाइ-बेर भेल जाइ छै, केतए छिछिआइले गेल अखनि धरि अँगनामे नै अछि। पुतोहुकेँ पुछलखनि-

"कनियाँ, बौआ कहाँ अछि।"

बेटाकेँ अपन जान सुरक्षित बूझि पुतोहु कहलकनि-

"बड़ी कालसँ नै देखलिऐ।"

पोताकेँ तकैले बुढ़िया दादी विदा भेली।

सुतै बेर गोविन्दा अलिसाएल आबि दादीकेँ कहलक-

"दादी बिछान बीछा दे?"

गोविन्दक बात सुनि दादी पिघलि गेली। ओछाइन ओछा कऽ सुता देलखिन। सेन्धपर पकड़ल चोर जकाँ, तामस फेर करुआ गेलनि। मुदा निनियाँ देवीक कोरामे देखि क्रोध घोंटए लगली। अखनि छोड़ि दइ छिऐ, भोरहरबामे पेशाब करैले उठेबे ने करत, बुझतै केहेन होइ छै सजमनिक गाछ तोड़नाइ। जाबे सभ करम नै कराएब ताबे चालि नै छुटतै।

भोरहरबामे गोविन्द दादीकेँ उठबैत बाजल-

"दादी-दादी।"

दादी गबदी मारैक विचार केलनि। मुदा तीन बेरक पछाति तँ गरियेबे करत, तइसँ नीक जे तेसर हाकमे अपने बाजि देबै। की हेतै, एकटा सजमनियेँक गाछ ने टुटल। फेर रोपि लेब।

❍